॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अप्रैल, 2014 वर्ष 17, अंक 4
विक्रमी सम्वत् 2071
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 24

ऋषिबोधोत्सव सहर्षोल्लास सम्पन्न

आर्य पुत्र श्री पूनम सूरी जी की अश्रुमय श्रद्धांजलि

ऋषि जन्म भूमि में तरंगें प्राप्त होती है। सात्विक मन और श्रद्धा चाहिए-पूनम सूरी

बोधोत्सव पर मुख्य कार्यक्रम के मंच का व्रहगिम दृश्य। मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी एवम् श्रीमती मणि सूरी एवं साथ में बाएं से स्वामी सदानन्द जी, श्री योगेश मुंजाल, कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात, स्वामी आर्वेशानन्द जी, श्री हंसमुख भाई परमार एवं श्री वाचोनिधि आर्य

दिनांक 21 फरवरी से 28 फरवरी 2014 तक इस वर्ष ऋषिबोधोत्सव उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। यजुर्वेद पारायण यज्ञ 21 फरवरी से टंकारा स्थित उपदेशक विद्यालय के आचार्य रामदेव जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। इस यज्ञ के मुख्य यजमान श्रीमती सन्तोष मुंजाल एवं श्री बृजमोहन मुंजाल जी (प्रबन्ध निदेशक हीरो ग्रुप इडस्ट्रीज) थे। पूरे सप्ताह भर आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध गीतकार एवं भजनोपदेशक श्री सतपाल जी पथिक के मधुर भजन प्रात: एवं सायं होते रहे। इसी अवसर पर राजस्थान के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री अमर सिंह आर्य वाचस्पति भी उपस्थित थे, जिन्होंने अपनी तेजस्वी एवं सिंह गर्जना से भजन एवं उपदेशों से ऋषि भक्तों का मन मोह लिया।

इसके अतिरिक्त दिनांक 25 फरवरी 2014 को रात्रि 8.00 बजे से 10.00 बजे तक उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए जिसमें भजन, क्ववाली, लघु नाटिका, भाषण इत्यादि सम्मिलित थे। इस सत्र की अध्यक्षता श्री एस.के. दुआ (पुना) ने की और मुख्य अतिथि के रूप में श्री एस.के. शर्मा (मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा), श्री लधा भाई पटेल (मुम्बई) श्रीमती अरूणा सतीजा (जयपुर) एवं श्री अरूण अवरोल (मुम्बई) उपस्थित थे। विशेष आमंत्रित के रूप में पंडित रमेशचन्द्र मेहता (पूर्व स्नातक टंकारा), ने सबकी उपस्थिति में अपार जनसमूह व ब्रह्मचारियों के कार्यक्रम की सराहना की और प्रथम बार ब्रह्मचारियों द्वारा भारत के सांस्कृतिक बिगाड़ की स्थिति प्रस्तुत की। नाटिका का उद्देश्य था कि यह स्थिति केवल मात्र भारत के युवा वर्ग का भारतीय संस्कृति एवं वैदिक संस्कृति से दूर होना ही है। प्रत्येक घर में यज्ञ हो और वैदिक मान्यताओं का चलन हो तो आने वाली युवा शक्ति इन संस्कारो से ओत-प्रोत होगी। इसी अवसर पर ब्रह्मचारियों ने क्ववाली रूप में शास्त्रार्थ भी प्रस्तुत किया, जिसमें ईश्वर सर्वव्यापक है कि प्रस्तुति रखी गयी।

भारतीय/वैदिक नववर्ष संवत 2071 की हार्दिक शुभकामनाएं

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ मुख्य यज्ञवेदी पर आसीन ब्रह्मा आचार्य रामदेव जी एवं पाठी ब्रह्मचारीगण, डॉ. सोमदेव जी (मुम्बई) उदबोधन करते हुए साथ में श्री सतपाल पथिक

दिनांक 26 फरवरी 2014 को प्रात: 6:00 बजे से प्रभात फेरी, व्योवृद्ध श्री गिजू भाई व्यास (स्वतंत्रता सेनानी) के संयोजत्व में निकाली गई। इसमें भारत से उपस्थित सभी राज्यों के ऋषि भक्तों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इसके उपरांत योग एवं आयुर्वेद की एक कक्षा एक घंटे की निरन्तर चलती रही।

प्रात: 8.00 बजे यज्ञ एवं उद्घाटन समारोह के रूप में आयोजित किया गया जिसमें श्रीमती एवं श्री एस.के. शर्मा, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, श्रीमती एवं श्री राजीव चौधरी, श्रीमती अमरिता पाल एवं डी.ए.वी. के अन्य गणमान्य अधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता स्वामी सुधानन्द सरस्वती (उड़ीसा) द्वारा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में श्री लधाभाई पटेल उपस्थित थे। विशेष आमंत्रित के रूप में श्री गिरीश खोसला वेदपथिक (यू.एस.ए.), श्रीमती रीटा एवं श्री राजीव चौधरी (ग्रेटर कैलाश) उपस्थित थे। इस अवसर पर सौराष्ट्र के स्कूलों एवं कालेजों के विद्यार्थियों के लिए टंकारा ट्रस्ट की ओर से बॉलीबॉल प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, व्यायाम प्रदर्शन उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा व वर्तमान सामाजिक समस्याओं पर संदेशात्मक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। प्रतियोगियों को ट्रस्ट की ओर से

यज्ञ ब्रह्मा का वरण करते श्री पूनम सूरी जी एवम् यज्ञ पर सपत्नीक आचमन/अग्नाधान एवम् यज्ञ में आहुतियां अर्पण करते श्री पूनम सूरी जी।

श्री सतपाल जी पथिक एवं श्री अमर सिंह आर्य वाचस्पति के मधुर भजन हुए। मुम्बई से विशेष रूप में इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए विश्वस्तरीय वेद प्रवक्ता डॉ. सोमदेव शास्त्री जी का विशेष प्रवचन हुआ। प्रवचन में इतना रस था कि प्रात: 8.00 बजे से लेकर अपराह्न 12.00 बजे तक ऋषि भक्त उपस्थित रहे।

अपराह्न 2.00 बजे सायं 5.00 बजे तक युवा उत्सव एवं नकद पुरस्कार, प्रमाण पत्र व बाहर से आने वालों को किराया दिया गया था। इसी अवसर पर डॉ. मुमुश्रु जी द्वारा वेद पाठ की प्रतियोगिता भी रखी गई। इस कार्यक्रम के संयोजक टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री हसमुख भाई परमार जी ने की। इस सत्र के अन्त में पंडित रमेश चन्द्र मेहता (पूर्व स्नातक) ने ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद देते हुए अपने टंकारा प्रवास के दिनों की याद करते हुए अपने संस्मरण सुनाए। **(शेष पृष्ठ 9 पर)**

यज्ञ वेदी पर उपस्थित श्री योगेश मुंजाल, श्री अरूण अबरोल, श्रीमती रेणू राजीव चौधरी, श्रीमती मारवाह, श्रीमती अमृता पाल, श्री एस.के. दुआ सपत्नीक श्री राजेन्द्र लाम्बा सपत्नीक

देखा न कोई ऐसा ऋषिवर का दीवाना

वैसे तो हम सभी उस देव दयानन्द के दीवाने है, पर यही एक सांझा कारण है कि हम सब आर्य समाज के माध्यम से वेद प्रचार, सामाजिक सेवा एवं अन्य प्रकल्पों द्वारा अपना सर्वस्व अर्पित किए हुए हैं। पूरे विश्व में लगभग हर स्थान पर आपको दयानन्द के दीवाने मिल जायेंगे, चाहे संख्या में कमी क्यों न हो लेकिन आर्य समाज का सत्संग में संगठित हो। अपनी जड़ो से जुड़ने का प्रयास करते हैं। आर्यसमाज का भवन है या नहीं कोई चिन्ता का विषय नहीं सुविधाजनक स्थान पर एकत्र हो साप्ताहिक सत्संग कर लेते है। विदेशों में जहां विपरीत संस्कृति है वहां साप्ताहिक सत्संग कर पाना भी एक चुनौती होती है।

स्वदेश में हम झगड़ते है पर उस दयानन्द के कार्यो को आगे बढ़ाने में निरन्तर लगे रहते है। गुट बनाते है, विरोध करते लेकिन उसी ओ३म् ध्वज के नीचे खड़े होकर उसी को सम्मान देते है और आर्य समाज का कार्य करते है। ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार कितना भी क्यों न हो सत्संग में सभी अनुशासन में सम्मिलित होते हैं क्योंकि ध्येय केवल एक ही होता है। दयानन्द, वेद प्रचार और सामाजिक कार्य करना। न अच्छी आदते छोड़ेगे और न ही बुरी आदतें। दोनों को साथ-साथ ही चलायेंगे। परन्तु कितने दिन? एक दिन ईश्वर के न्याय के आगे झुकना होगा और बुराई अहंकार को छोड़ केवल अच्छाई की ओर जाना होगा। सब अपने-अपने विवेक से सोचे और अपने कार्य को प्रशस्त करें।

जिस एक व्यक्ति के व्यक्तित्व ने मुझे इस लेख लिखने के लिए प्रेरित किया उसके व्यक्तित्व को समझने के लिए हमें उपरोक्त चर्चा की ओर ध्यान आकर्षित करना ही था।

इस व्यक्तित्व को पिछले कुछ वर्षो से अत्यन्त निकटता से देखने और समझने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप परिवार की वैदिक संस्कृति को निभाने वाली तीसरी पीढ़ी से सम्बन्ध रखते हैं। विरासत में वैदिक मान्यताएं, बाल्यकाल से ही घुट्टी के रूप में प्राप्त हुई और आज यह मान्यताएं इतनी परिपक्व हो चुकी है कि उन्हें हिला पाना संभव नहीं है। प्रथम बार आपको जब यज्ञ पर उपस्थित देखा तो चकित रह गया। आप यज्ञ में इतने आनन्द से सम्मिलित थे जैसे अपने किसी ऐसे मन चाहे गीत को गा रहे हो। एकदम मस्त हो केवल ध्यान यज्ञ में, यज्ञ और मन का ऐसा समन्वय कि यज्ञ स्थल से बाहर की कोई आवाज जैसे उन्हें सुनाई ही नहीं दे रही। प्रार्थना मन्त्र बोलते हुए यज्ञवेदी पर बैठे आनन्दित हो झूमते है। ऐसा मैने अपने जीवन में प्रथम बार देखा क्योंकि मैं आश्चर्य चकित था कि मैंने व्यक्ति अपने शरीर से यज्ञ करते देखा परन्तु शरीर और मन से पहली बार, क्योंकि आपका, शरीर, मन और मन्त्रों उच्चारण में समन्वय और संबंध देखते ही बनता है।

ऐसा ही एक अवसर आया इस वर्ष टंकारा में उपस्थित इस देवदयानन्द के दीवाने का दीवानेपन आप सहपत्नीक टंकारा में आयोजित यज्ञ की पूर्णाहुति पर मुख्य यज्ञमान के रूप में उपस्थित थे। देर रात मुम्बई से आने पर आप राजकोट में ही ठहर गए। प्रातः मैंने दूरभाष पर चर्चा की कि यज्ञप्रातः प्रातः 8.30 बने प्रारम्भ होगा और राजकोट से टंकारा सड़क मार्ग से 1.30 घंटे लगते है। इस कारण आप 7.00 बजे अवश्य चल पड़े। आपने उत्तर दिया कि हम ठीक समय पर पहुंचे जाएंगे। मैंने आगे आग्रह किया कि चलने से पूर्व हल्का अल्पाहार राजकोट में कर लेवे क्योंकि लगातार यज्ञ के उपरांत ध्वजारोहण करने तक 12.30 बज जायेगें। उनका मेरे इस निवेदन का उत्तर मुझे फिर प्रभावित कर गया। आपका उत्तर था ''कि हम पति-पत्नी यज्ञ के पूर्व अन्न-जल ग्रहण नहीं करते।''

हम अपने आप में विवेचन करें कि हम इस प्रण को कितना निभाते है। आयु के अनुसार यात्रा के समय दवा आदि लेने हेतु कुछ खा ही लेते है क्योंकि कुछ दवाएं खाली पेट लेना संभव नहीं लेकिन साधुवाद देना चाहूंगा इस दीवाने दम्पत्ति को जिन्होंने अपने प्रण को टूटने नहीं दिया। मुझे गर्व है कि मेरा इस निष्ठावान आर्य से सम्बन्ध है।

दूसरी घटना उसी दिन टंकारा में गठित हुई जब टंकारा से प्रस्थान से पूर्व आप जन्मस्थान पर उस गृह को देखने गए जहाँ स्वामी जी का जन्म हुआ था। आप जब वहाँ पहुंचे तो आपके आंखो से अश्रुधारा बह रही थी। ऐसे ही अकारण अश्रुधारा नहीं बहती। सुना है अधिक दुःख या सुख में भी अश्रुधारा बहती है। यहाँ सुख और आनन्द के अनुभव से आंखे नम हो आई और वह गृह के सम्मुख खड़े हो शांत लगभग 5 मिनट तक खड़े रहे, आंखे बंद किए। हम भी साथ में शांत खड़े थे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे कोई प्रातः काल में सूर्य की किरणों का ताप आंखे बंद कर प्राप्त कर रहा हो। वह निश्चित ही यहाँ से ऊर्जा प्राप्त कर रहे होगे। आपने अपने वक्तव्य में भी कहा कि टंकारा में ऊर्जा की तरंगे प्राप्त होती है केवल सात्विक मन और उस दयानन्द के प्रति अनथक श्रद्धा की आवश्यकता है, आपने आह्वान किया कि अपने अन्दर के ट्राँसमीटर को चालू रखें, आपको ऊर्जा की तरंगे अवश्य प्राप्त होगी।

अन्त में मैं सूचित करना चाहूंगा कि ये व्यक्ति और कोई नहीं आर्यपुत्र श्री पूनम सूरी जी हैं, आप डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंन्धकर्त्री समिति के प्रधान एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के भी प्रधान है, साथ ही टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी भी है। मैं लगभग आठवीं कक्षा में डी.ए.वी. चित्रगुप्ता रोड, पहाड़गंज में पढ़ता था तो उस समय डा. जी.एल. दत्ता प्रधान हुआ करते थे। उनके उपरांत सभी प्रधानों को मैंने यज्ञ करते हुए, सामाजिक समारोह में सुना और उनकी कार्यशैली से भी भलीभांति परिचित रहा। सभी आर्य थे परन्तु श्री पूनम सूरी जी जैसी दयानन्द के प्रतिलगन, श्रद्धा और प्रेम किसी में भी नहीं देखा। हमें गर्व है ऐसे आर्यपुत्र पर जिनके नेतृत्व में डी.ए.वी. एवं आर्यसमाज एक नई चुनौती और उत्साह के साथ नये कीर्तिमान स्थापित करने के लिए तत्पर है।

तभी तो कहा ''देखा न कोई ऐसा ऋषिवर का दीवाना''।

अजय टंकारावाला

प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि परमात्मा की उपासना करे और परमात्मा से मांग करे कि हे प्रभो मेरी बुद्धि संमार्ग पर चले जिससे कि मैं जीवन में किसी प्रकार का पाप नहीं करूँ और असत्य के मार्ग पर न चलूं। किसी भी मनुष्य के साथ बेईमानी, धोखा नहीं करूं। जिससे मेरा जीवन सुखी हो। मेरे जीवन के साथ मेरा परिवार भी सुखी हो। मेरे जीवन के साथ मेरा परिवार भी सुखी होगा, क्योंकि मेरे द्वारा कमाया गया धन पवित्र होगा। पवित्र अन्न खाने से बुद्धि पवित्र होगी, जिससे पवित्र कर्म होंगे। कर्म पवित्र होगे तो सुख ही मिलेगा।

- स्वामी दयानन्द

वेदों के झरोखे से

❒ स्वामी ध्रुवदेव जी परिव्राजक

येन द्यौरूग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्व. स्तभितं येन नाक:।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

(यजु. अ. 32/मं.6)

पदार्थ (1):- (येन) जिस जगदीश्वर ने (उग्रा) तीक्ष्ण स्वभाव वाले या तीव्र तेज वाले (द्यौ:) प्रकाशयुक्त सूर्यादि पदार्थ और (पृथिवी) भूमि (दृढ़ा) दृढ़ की है या धारण की है (येन) जिस जगदीश्वर ने (स्व:) सुख को (स्तभितं) धारण और (येन) जिसने (नाक:) सब दु:खो से रहित मोक्ष को धारण किया है (य:) जो (अन्तरिक्षे) मध्यवर्ती आकाश में वर्तमान (रजस:) सबलोक लोकान्तरों को (विमान:) विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस (कस्मै) सुखदायक (देवाय) कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए (हविषा) सब सामर्थ्य से (विधेम) विशेष प्रेमभक्ति करें या सेवा करें। (सं.वि+ऋ.दया.कृत यजुर्वेदभाष्य)

भावार्थ:- ईश्वर मन्त्र द्वारा उपदेश देते हैं–हे मनुष्यो! जो समस्त जगत् का धर्ता, सब सुखों का दाता, मुक्ति का साधक, आकाश के तुल्य व्यापक परमेश्वर है उसी की भकित करो। (ऋ. दया. कृत यजुर्वेदभाष्य अ.32/मं.6)

टिप्पणी:- (क) ईश्वरचित सूर्य प्रति सैकण्ड जो ऊर्जा फैंकता है उसका दो अरबवाँ भाग ही पृथ्वी के हिस्से में आता है। यदि मानव इसका 10,000 वां भाग भी उपयोग में ले तब भी ऊर्जा की समस्या हल हो सकती है। इस ऊर्जा के उत्सर्जन में सूर्य प्रति सैकण्ड लगभग 40 टन वजन खो देता है ऐसा बताते हैं।

(ख) हमारी आकाश गंगा में कम से कम 10 अरब सूर्य है जिनमें से प्रत्येक सूर्य का भार हमारे सूर्य से अधिक है ऐसा बताते हैं। हमारी आकाशगंगा के समान अरबों आकाशगंगाएं आकाश में हैं इनका रचयिता व धारक ईश्वर है।

(ग) पृथिवी का द्रव्यमान=दस अरब का 6600 अरब गुना टन बताया जाता है।

(घ) ज्येष्ठा नक्षत्र का व्यास हमारे सूर्य से 450 गुना बताया जाता है। हमारे सूर्य जैसे 6 करोड़ सूर्य एक साथ मिलाये जाय तो ज्येष्ठा नक्षत्र बनेगा। 13 लाख पृथिवियों को एक साथ मिलाने से सूर्य बनता है।

(ड़) विज्ञान ज्योतिषियों का कहना है कि एक खरब से ऊपर निहारिकाएं या आकाशगंगाएं तो हमने गिनी हैं।

(च) ईश्वर की व्यवस्था से पृथ्वी अपने ध्रुवीय अक्षों पर घूमते हुए 23 डिग्री के कोण पर झुकी रहती है जिससे ऋतुओं में नियमितता आती है। पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमते रहने के कारण उसका बसने योग्य क्षेत्रफल दुगुना हो गया है ऐसा बताते हैं।

(छ) सूर्य से बाहर निकलने वाली ज्वालाओं में सबसे बड़ी ज्वाला की लम्बाई 5.88 लाख किलोमीटर नापी गयी है।

(ज) पृथ्वी के चारों ओर गैसों का वायुमण्डल काफी ऊँचा (500 मील) व इतना घना है कि वह तीस मील प्रति सेकेण्ड के हिसाब से प्रतिदिन गिरने वाले दो करोड़ उल्काओं के घातक प्रभाव से पृथ्वी को बचा लेता है। यह वायुमण्डल तापमान को ऐसी सीमा तक सीमित रखता है कि जिनमें प्राणी जीवित रह सकें। यह ईश्वरीय सुरक्षा व्यवस्था है। उल्काओं की सबसे भारी वृष्टि 16, 17 नवम्बर 1977 ई. की रात को देखने को मिली ऐसा बताया जाता है।

(स) ईश्वर पृथिवी व सूर्य का परिमाणकर्ता है। उनके आकार का निर्धारण ईश्वरकृत है। यदि पृथिवी का आकार इतना छोटा होता जितना चन्द्रमा का अर्थात् वर्तमान व्यास से उसका व्यास केवल एक चौथाई होता तो गुरुत्वाकर्षण शक्ति न वायुमण्डल को सम्भाल पाती न पानी को और तापमान भी इतना सीमातीत होता कि जीवन धारण करना कठिन हो जाता । यदि पृथिवी का व्यास वर्तमान व्यास से दुगुना हो जाय तो गुरुत्वाकर्षण शक्ति के दुगुना होने से वायुमण्डल की ऊँचाई खतरनाक रूप से घट जायेगी व उसका दबाब भी बढ़ जायेगा जिसका जीवन पर गम्भीर घातक असर पड़ेगा। सर्दी वाले क्षेत्र बहुत बढ़ जायेंगे। मानव समुदाय के विभिन्न वर्ग अलग-थलग पड़ जायेंगे और यात्रा करना या संचार साधनों का प्रयोग करना सर्वथा कठिन व लगभग असम्भव हो जायेगा ऐसा बताते हैं।

(ञ) यदि पृथिवी का आकार सूर्य जितना बड़ा हो जाय व घनता ज्यों की त्यों रहे तो इसकी गुरुता 150 गुनी बढ़ जायेगी। वायुमण्डल की ऊँचाई घटकर केवल 4 मील रह जायेगी। पानी का भाप बनकर उड़ना असम्भव हो जायेगा। मानवों का आकार इतना छोटा हो जायेगा जैसे गिलहरी का ऐसा बताया जाता है।

(ट) पृथिवी व सूर्य के बीच की दूरी भी ईश्वर द्वारा निर्धारित है। यदि सूर्य की दूरी वर्तमान दूरी से दुगुनी हो जाये तो सर्दियों के मौसम लम्बाई में दुगुने हो जायेंगे। सब प्राणी ठण्ड के मारे मर जायेंगे। यदि सूर्य की दूरी वर्तमान दूरी से आधी होवे तो गर्मी के मौसम लम्बाई में चौगुने हो जायेंगे व सब प्राणी जल-भुन जायेंगे ऐसा बतलाते हैं।

- आर्यवन, रोजड़, पत्रा, सागपुर, जि. साबरकांठा, गुजरात-383307
दूरभाष 02770-287418

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

ऋषि बोधोत्सव

❒ टंकारा श्री अरूणा सतीजा

आप सब ऋषि भक्त प्रतिवर्ष हजारों किमी. की दूरी तय कर तथा हजारों रूपयों की राशि खर्च कर ऋषि बोधोत्सव के पावन पर्व पर शिवरात्रि को प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में टंकारा ग्राम में पधारते हैं यह आप सब की महान ऋषि के प्रति भक्ति, आस्था तथा असीम श्रद्धा का प्रमाण है। हो भी क्यों न महान ऋषिवर का महाबोधोत्सव जो है। इस धरती के कण-कण में वह शक्ति है जो भक्तों के मन में नव उर्जा का संचार कर उन्हें नव जीवन प्रदान करती है। उन्हें अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है जो उन्हें प्रतिवर्ष यहां आने के लिए आकर्षित करती है।

महर्षि देव दयानन्द महामानव थे। उन्हें ईश्वरीय दिव्य दृष्टि प्राप्त थी जो आज से 176 वर्ष पूर्व शिवरात्रि को टंकारा ग्राम के छोटे से शिव मन्दिर में उनमें प्रगट हुई थी जिसकी पुष्टि उनके प्रकाण्ड विद्वान गुरु विरजानन्द जी ने की थी।

शिक्षा की समाप्ति पर जब ऋषिवर गुरु दक्षिणा में लौंग लेकर अपने गुरु के पास गये तो गुरु विरजानन्द जी ने थाली में से एक लौंग लेकर कहा दयानन्द ऐसे लौंग तो बाजार में बहुत मिल जायेंगे। परन्तु जो चीज तुम्हारे पास है वह और किसी में भी नहीं है। दयानन्द वह क्या? दयानन्द मैंने तुम्हारे अन्दर एक ज्वाला के दर्शन किए हैं। उस ज्वाला को मैंने सही दिशा देने का पूरा प्रयास किया है। वह ज्वाला है ''ज्ञान की ज्वाला''।

देश में फैले अनेकों मत मतान्तरों के कारण देश में अविद्या, अंधविश्वास, व्यभिचार तथा अत्याचारों तथा पापों का घोर अन्धकार छाया है। जाओ वैदिक धर्म के अलोक से समाज को अलौकित कर दो। तथास्तु! अपने कार्यो को मूर्तरूप देने के लिए आर्यसमाज संगठन की स्थापना की। इसके माध्यम से समाज में व्याप्त सभी प्रकार की कुरीतियों को दूर साधारण जन के जीवन से सम्बन्धित सभी क्षेत्रों में क्रान्ति ला दी। आजादी का बिगुल बजाया। वेदों का पुनरूद्धार कर घर-घर वेदों की दुन्दुभि बजाई। नारी सुधार तथा दलितों का उद्धार किया। वेद ज्ञान के अलोक से सबके जीवन को अलोकित करने का जीवन पर्यन्त प्रयास किया। वह दूसरों के लिए ही जिये दूसरों के लिए ही प्राण त्यागे। महर्षि के जीवन का एक ही लक्ष्य था।

किसी की मुस्कुराहट पर हो निस्सार।
किसी का दर्द ले सके तो ले उधार। जीना इसी का नाम है।

आओ हम सब ऋषि अनुयायी बोधोत्सव के गौरवमय अवसर पर उनके मार्ग का अवलम्बन करने की शपथ लें।

अगर हम वह सब नहीं कर सकते जो ऋषि ने किया तथा उनकी पहली पीढ़ी के शिष्यों, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, लाला लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी तथा अन्य ऐसों ने किया। कम से कम हमारे में इतना बोध तो होना चाहिए कि हम वह सब तो न करें जो ऋषिवर नहीं चाहते थे। अन्यथा हमारा टंकारा आना मात्र सैर-सपाटा बन कर रह जाएगा। यह चिन्तन का विषय है, बोध का विषय है।

आज के पावन अवसर पर मैं उन महान विभूतियों को जिन पर हमें गर्व है, जिनके कारण हम प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से टंकारा में मनाने के लिए देश विदेश के कोने कोने से आते हैं वह थे स्व. महाजन जी लाला दीवान चन्द जी। स्व. ओंकार नाथ जी मानकटाला तथा उनके अन्य साथियों को श्रद्धासुमन सादर समर्पित करती हूं। इन्होंने अपना तन मन व धन टंकारा के निर्माण में लगा दिया। टंकारा ट्रस्ट के निर्माण हेतु इन्हें भूख प्यास, कड़कती धूप एवं बियाबन (बिरान) जंगत की अंधेरी व सद्र रातों की पीड़ा को सहपत्नी सहना पड़ा। इनका त्याग, तपस्या तथा कड़ी व कठोर मेहनत रंग लाई और टंकारा ट्रस्ट की मजबूत नींव तैयार हो गई।

मजबूत नींव, नींव बन कर रह जाती अगर आदरणीय श्री रामनाथ जी सहगल अपना सारा जीवन टंकारा ट्रस्ट को सौंप न देते। आज वह टंकारा ट्रस्ट की धड़कन है। उनकी लगन व जनून का यह प्रतिफल है कि आज मजबूत नींव पर भव्य भवन हमारे सामने खड़ा है जिसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं डेमी नदी का किनारा उगता सूर्य, मोर आदि पक्षियों का मधुगान, बगीचे में चलते फव्वारे की कलकल किसी स्वगीर्य वातावरण से कम नहीं है।

विशाल मुख्य द्वार जिसकी गम्भीरता गेट वे आफ इण्डिया से कम नहीं है। विशाल तथा कलात्मक ढंग से तैयार की गई अद्भुत यज्ञ शाला जो श्री गुरुदत्त जी तिवारी तथा श्री दुआ साहब के बुद्धि ज्ञान का प्रतीक है। लगभग सौ गौमाता वाली गौशाला।

दो सौ पचास ब्रह्मचारियों का अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय। श्री ओंकारनाथ जी आर्य की स्मृति में चलने वाला महिला प्रशिक्षण सिलाई केन्द्र। आत्मिक बल देने वाली टंकारा समाचार पत्रिका जिसके वर्तमान में 12 हजार से अधिक सदस्य है जिसका सम्पादन श्री अजय जी सहगल द्वारा होता है। एक बार स्व. ओंकार नाथ जी ने कहा था कि मैं टंकारा को शेकस्पीयर के जन्म स्थान की तरह विश्व दर्शनीय बनाऊंगा। आज उनका सपना साकार हुआ। काश वह आज जीवित होते, खुशी व गर्व से फूले नहीं समाते। उनका दूसरा सपना था ऋषि जन्म स्थान गृहगर्भ को ट्रस्ट को दिलवाना। उनका यह सपना पूरा किया महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल ने। सहयोग दिया सहगल साहब तथा बृजमोहन जी मुंजाल ने।

गत दो वर्ष पूर्व आदरणीय सहगल साहब ने अपनी आन्तरिक भावना को अपने परिवार के सदस्यों के सम्मुख जहां मैं भी उपस्थित थी व्यक्त करते हुए कहा! बहिन मैं शेर था शेर। दिन में बीस बीस घण्टे काम कर के भी थकता नहीं था परन्तु आज मैं थक गया हूं। सब भावुक हो गये। मैंने कहा शेर शेरों को ही जन्म देता है। आज उनके सुपुत्र श्री अजय सहगल ने उनके कार्यो की कमान बड़ी सुधड़ता से सम्भाल ली है जिसकी सभी लोग भूरि-भूरि प्रशंसा करते नहीं थकते।

ट्रस्ट के ट्रस्टियों की दूसरी युवा पीढ़ी श्री अजय जी सहगल, श्री सुधीर जी मुंजाल, श्री योगेश जी मुंजाल, श्री सुनील जी मानकटाला, श्री अरूण जी अब्रोल, श्री वाचोनिधि जी (गांधी धाम) एवं राजीव जी चौधरी तथा अन्य टंकारा ट्रस्ट को नवीनतम व्यवस्था की ओर ले जा रहे हैं। इनका सब कार्य टीम वर्क की भावना से प्रेरित है। इनका परस्पर प्रेम व सहयोग अति प्रशंसनीय ही नहीं परन्तु अनुकरणीय भी है। इन की आंखों में सपने अपार है। मन में बुलन्दियों को छू लेने के अरमान हैं। आप सबके सहयोग, स्नेह व शुभकामनाओं का इन्तजार है।

- फ्लेट न. बी-9, ध्रूव मार्ग, तिलक नगर, जयपुर, मो. 09460183872

वेद द्वारा अनुशंसित श्रम-संस्कृति की गरिमा

❒ उमाकांत उपाध्याय

प्राय: दो प्रकार के लोग देखे जाते हैं - कुछ ऐसे लोग हैं जो स्वाभाव से क्रियाशील हैं (एक्टिव हैबिट्स)। उन्हें काम करने में आनंद आता है। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जिन्हें काम करने की इच्छा ही नहीं होती, ये आलसी, प्रमादी स्वभाव के होते हैं। क्रियाशील प्रकृति के लोग संसार में उन्नति करते हैं और अपने जीवन में सफल रहते हैं और वे समाज, देश, राष्ट्र, सबके लिए उपयोगी होते हैं। क्रियाशील लोग समाज के लिए भूषण के सामान होते हैं।

अथर्ववेद का एक मंत्र है - **''श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्त ऋते श्रिता:''** -अथर्व. 12.5.1। इसका अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति और राष्ट्र दोनो की उन्नति के लिये प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को परिश्रम, तप और संयम से संयुक्त किया है। आर्थिक उन्नति, शारीरिक उन्नति, धन-संपत्ति की प्राप्ति के लिये प्रभु-विश्वास, ऋताचार, न्यायोचित मार्ग का अवलंबन करना मनुष्य को उचित है। हमारा नित्य का अनुभव है कि हम जिस अंग से काम करना बंद कर देते हैं वह अंग निर्बल, निष्क्रिय हो जाता है. ऐसे निष्क्रिय व्यक्ति भी हो सकते हैं और निष्क्रिय राष्ट्र भी हो सकते हैं। द्वितीय विश्व-युद्ध में फ्रांस के एक विश्व-प्रसिद्ध कमाण्डर को जर्मनी के सैनिकों ने लड़ाई के मैदान में पकड़ लिया। जब उसे बंधक बनाकर हथकड़ी पहनाकर बर्लिन की सड़कों पर ले जा रहे थे तो किसी पत्रकार ने उससे पूछा- आप तो संसार के दो-चार गिने चुने कमाण्डरों में हैं, फिर आप कैसे बंधक बनाए जा सके? उस कमांडर ने बिना लाग-लपेट के उत्तर दिया कि कमांडर सिर्फ युद्ध का संचालन करता है। जिस समय जर्मनी के सैनिक कवायद, परेड और युद्ध का अभ्यास करने में परिश्रम कर रहे थे उस समय फ्रांस के सैनिक होटलों और क्लबों में युवतियों और नृत्यांगनाओं की कमर में हाथ डाल कर शराब में धुत्त होकर नाच रहे थे। इस शराबी, पियक्कड़, नचनिया संस्कृति की विलासिता का यही फल होना था। यह है परिश्रमहीनता, विलासिता का व्यक्तिगत और राष्ट्रीय दुष्परिणाम। आलसी लोगों का सिद्धांत है - **''अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम, दास मलूका कह गए, सब के दाता राम।''** ऐसे आलसी भाग्यवादियों को राष्ट्रकवि दिनकर जी की उक्ति ध्यान मे रखनी चाहिए- ''ब्रह्मा का अभिलेख पड़ा करते निरुद्द्यमी प्राणी धोते शूर कुअंक भाल का बहा भुओं से पानी।'' ऐतेरयब्राह्मण में श्रम की महत्ता का बड़ा प्यारा वर्णन है। वहां कहा गया है- ''नानाश्रान्ताय श्रीरस्ति इति रोहित! शुश्रुतुंय पापो नृषद्वरो जन इन्द्र इच्चरत: सखा. चरैवेति चरैवेतिह्र। इसका अर्थ है कि श्रम से लक्ष्मी, श्री, शोभा मिलती है। निठल्ले बैठे रहने वालों को पाप दबोच लेता है। ऐश्वर्य के देव इन्द्र उसी के मित्र बनते हैं जो निरन्तर चलता रहता है, श्रम करता रहता है. वहां श्रमगीत बहुत विस्तार से दिया हुआ है। विस्तार-भय के कारण हम एक-दो बातें ही और लिख रहे हैं। गतिशील परिश्रमी की जांघों में फूल खिलते हैं। परिश्रम का आत्मा सुभूषित होकर फल प्राप्त कर लेता है। परिश्रमी के पाप मर जाते हैं। सो चलते रहो, तपस्वी बने रहो, आलसी, आरामतलब मत बनो. बैठे हुए का सौभाग्य बैठ जाता है, खड़े हुवों का सौभाग्य खड़ा रहता है। सोनेवालों का सौभाग्य भी सो जाता है। गतिशील का, उद्द्यमी का, सौभाग्य भी प्रगति करता है. चलता हुआ मनुष्य, क्रियाशील मनुष्य जीवन का मधु, जीवन की मिठास, जीवन का आनंद प्राप्त करता है। चलते हुए को ही स्वादिष्ट फल मिलता है। सूर्य का श्रम देखो, वह सदा चलता रहता है, कभी आलस्य में नहीं पड़ता। अत: चलो, चलते रहो, चलते रहो। कृषक अपने कृषि कार्य में, उद्योगी अपने उद्योग में, श्रमजीवी अपने कार्य में, किं बहुना, प्रत्येक कार्य में सफलता श्रम से ही मिलती है। अत: परमेश्वर ने मानव जीवन की सफलता के लिए हमें परिश्रमी बनाकर उत्पन्न किया है। सफलता का दूसरा चरण है- तप, आग तापना, एक पैर पर खड़े रहना, काँटों पर लेटना, जीभा में सूजा ठोंक लेना आदि तप नहीं, पाखंड है। तप का अर्थ है '' तप: स्वकर्म वर्तित्वम्ह अर्थात् अपने कर्त्तव्य कर्म में कष्ट सहना, शीत, ताप, अनुकूल, प्रतिकूल परिस्थितियों को सहना तप कहलाता है। हमारे देश में बेकारी दूर करने के लिए 'मनरेगा' अच्छा प्रोग्राम है किन्तु उसमे श्रम और तप कम और झूठ के आधार पर रूपयों की लूट ज्यादा हो रही है. सरकार ने वृद्धों और विधवाओं को पेनशन देने की योजना बनायी है। विधवाओं और 64-70 साल के वृद्धों को छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों और लघु उद्योगों के साथ जोड़ देने से उत्पादन बढ़ेगा, बेरोजगारी दूर होगी और लोगों को सहायता भी मिलेगी। उदहारण के लिए हथकरघा, चटाई बनाना, अचार, अमचुर, चिप्स, बड़ी, सौस, पापड़ बनाने जैसे सैकड़ों धन्धे इन कामों के साथ जोड़े जा सकते हैं। इससे काम करनेवालों का आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ता है। आज गाँव में आम, इमली, आंवला, फ्रूट-प्रोसेसिंग अनेकों कार्य थोड़े परिश्रम से भी सिद्ध हो जाते हैं।

मन्त्र में अगली कड़ी- 'ब्रह्मणा वित्ते ऋत श्रेत:'. ऋत का अर्थ है 'सत्य', उचित, ईमानदारी आदि और ब्रह्म का अर्थ है ज्ञान- सिद्धांत और प्रयोग- दोनों। वस्तुत: ज्ञान की सफलता प्रयोग और व्यवहार में ही है- 'यस्तु क्रियावान्, स एव विद्वान्' - जो ज्ञान को प्रयोग मे ला सके वही वास्तव मे विद्वान् है। किन्तु उसके साथ सत्य, ईमानदारी, उपभोक्ता को उपयोगिता का लाभ अवश्य मिले तभी ज्ञान और क्रिया में ऋत तत्व आ पायेगा। आज बचे-खुचे खाद्य पदार्थों को री-साइकलिंग करके सौस, केमिकल, सिरका, न जाने क्या क्या पदार्थों को मिलकर बर्गर संस्कृति में सैकड़ों पदार्थ खिलाये जा रहे हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ लोगों में स्वाद और आवश्यकता पैदा करने के लिए बड़े-बड़े तकनीकी विद्वानों पर हजारों करोड़ रूपये खर्च कर रहे हैं। यह अप-संस्कृति है। वेद-मन्त्र इस संस्कृति को 'ब्रह्मणा वित्ते ऋत श्रेत:' कहकर निषेध कर रहा है। योग्यतम की जीत (survival of the fittest) यह पशु-संस्कृति, जंगली विचारधारा है। बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है। इसी सिद्धान्त के आधार पर आज 'वालमार्ट' आदि अनेकों कम्पनियाँ छोटे-छोटे व्यवसायियों को खाए जा रही हैं। अब छोटे-छोटे फेरीवाले, छोटे दुकानदार, सब समाप्त हो जाने के कगार पर खड़े दिखाई दे रहे हैं। लगता है कि यदि कोई देव-पुरुष इन बहुराष्ट्रीय शोषण करनेवालों को नियंत्रित नहीं कर पायेगा तो सारे मध्यवित्त 70-80 प्रतिशत लोग, 25-30 प्रतिशत बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आर्थिक दास, गुलाम बन कर जीने को मजबूर हो जायेंगे. राष्ट्रकवि दिनकर जी ने कभी लिखा था- 'विद्युत् की इस चकाचौंध में देख, दीप की लौ रोती है, हरी, हृदय को थाम, महल के लिए झोपड़ी बलि होती है। आज की यह सर्वग्राही बहुराष्ट्रीय तकनीक सुरसा की तरह मानव की स्वतंत्रता को निगल जाने के लिए तैयार है. इस युग में केवल व्यवसाय और उत्पादन ही नहीं, ज्ञान, चिंतन, विचारसरणी, सभी को गुलाम बनाने की योजना बड़ी पक्की, सुचिन्तित दिखाई पड़ रही है। आज के युग में ब्रेनवाश का भय बहुत भयानक लग रहा है।

- पी-30, कालिंदी हाऊसिंग स्कीम, कोलकाता-700089

कहीं माटी की हंडिया में छिद्र न हो जाये

❐ रमेश चन्द्र पाहूजा

आईए कुछ समय के लिए लौट चलते हैं अपने बचपन की ओर जब रसोईघर में खाना पकाने के लिए न तो बिजली होती थी और न ही कुकिंग गैस। लकड़ी और उपले जलाकर खाना चूल्हों पर बनता था। घर की देवियाँ मिट्टी की हाँडी में शुद्ध बासमती की भात चढ़ा देती थी। उपलों की धीमी-2 आँच में भात पकनी आरम्भ हो जाती थी। जितनी धीमी आग उतनी ही स्वादिष्ट भात तैयार हो जाती जैसे कि भात न हो अमृत हो। किन्तु यजुर्वेद का निम्नलिखित मन्त्र तो किसी और ही हंडिया की, किसी अन्य भात की ओर ही संकेत कर रहा है।

मित्रैतां त उखाँ परिददामि। अभित्यै एषा मा भेदि॥ यजुर्वेद।

अर्थात् हे मित्र! मैं तुझे मिट्टी की हंडिया दे रहा हूँ। यदि तू मृत्यु के भय से छूटना चाहता है, यदि तू मृत्यु पर विजय प्राप्त करना चाहता है तो इसमें छिद्र मत होने देना, इसे मत तोड़ना। इसका सद्-उपयोग करना। अब प्रश्न उठता है कि यह मिट्टी की हंडिया है क्या? मनुष्य का पार्थिव शरीर ही मिट्टी की हंडिया है। इसे पार्थिव इसलिए कहा जाता है क्योंकि हमारा शरीर जो पांच तत्वों, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश का बना हुआ है, इसमें पृथ्वी का अंश मुख्य रूप से अधिक है।

वेद माता आगे आदेश दे रही है कि इस माटी की हंडिया में, तुझे ओदन (भात) पका कर मृत्यु को पार करना है, अमरत्व को प्राप्त करना है। वेद माता ने अलंकारिक शैली में ब्रह्म को ओदन के नाम से पुकारा है। अब पुनः विचार करते हैं कि ओदन रूपी ब्रह्मा का वास्तविक स्वरूप क्या है और उसको पकाने के पीछे क्या तात्पर्य है? ब्रह्म जो अनन्त है, असीम है, उसे शब्दों में कैसे बांधा जा सकता है? किन्तु फिर भी अपनी अल्प बुद्धि द्वारा जिसने जैसा जाना, जितना जाना, अपनी लेखनी द्वारा बखान करने का इस प्रकार प्रयास किया।

1. महर्षि भृगु शिक्षाकाल में अपने पिता महर्षि वरूण के सम्मुख जिज्ञासा प्रकट करते हैं कि ब्रह्म क्या है? महर्षि वरूण ब्रह्म की व्याख्या इस प्रकार से करते हैं:-

जो संसार का कर्ता, धर्ता और हर्ता है, उसे ही ब्रह्म के नाम से जाना जाता है। बालक भृगु यह उत्तर पाकर चले जाते हैं, किन्तु मन में यह चिन्तन आरम्भ हो जाता है कि ऐसी कौन सी वस्तु हो सकती है जिसमें ये तीनों गुण समाहित है। कुछ दिनों के उपरान्त महर्षि वरूण ने बालक भृगु से पूछा कि उसने 'ब्रह्म' को क्या जाना? इस पर बालक भृगु ने बहुत प्रसन्न होकर कहा कि अन्न ही ब्रह्म है। अन्न से ही वीर्य्य बनता है, वीर्य्य से प्राणीमात्र की उत्पत्ति होती है। अन्न के ग्रहण करने से ही जीवन-यापन होता है और अन्न के न मिलने पर मृत्यु हो जाती है। इसलिए अन्न ही 'ब्रह्म' है। महर्षि वरूण ने मुस्कुरा कर कहा-अभी तो तुम अन्नमय कोश तक ही सीमित हो। जाओ और चिन्तन करो। कुछ समय के पश्चात् ऋषि ने फिर अपने पुत्र से ब्रह्म के विषय में प्रश्न किया। बालक भृगु ने फिर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा कि प्राण ही ब्रह्म है क्योंकि प्राणों के प्रवेश से ही उत्पत्ति, प्राणों के चलते रहने से ही पालना और प्राणों के निकल जाने से ही मृत्यु होती है। ऋषि ने कहा कि अभी तो तुम प्राणमय कोश तक ही पहुँचे हो। बालक भृगु ने और चिन्तन मन्थन करते हुए कहा कि मन ही ब्रह्म है। मन में ही विचार जन्म लेते हैं, पनपते हैं और समाप्त हो जाते हैं। यह मनोमय कोश की स्थिति है। इसी प्रकार विज्ञानमय कोश को लांघ कर, बालक भृगु इस निर्णय पर पहुँचे कि जीवात्मा ही ब्रह्म है। इस पर महर्षि वरूण ने अपने पुत्र को उपदेश दिया कि 'जीवात्मा' ब्रह्म नहीं हो सकती क्योंकि वह तो अल्पज्ञ, अल्पशक्तिमान, परिछिन्न और केवल सत्-चित्त है। वह तो स्वयमेव आनन्द की तलाश में है। आनन्द ही ब्रह्म का दूसरा नाम है। ब्रह्म ही आनन्द स्वरूप है जिसे प्राप्त कर जीवात्मा आनन्दमय हो जाता है। अतएव तू सत-चित्त आनन्द स्वरूप को ही 'ब्रह्म' जान।

2. केनोपनिषद् के ऋषि का कथन है कि ये आँखे जिसको देखती हैं वह ब्रह्म नहीं है वरन् ब्रह्मा वह है जिसने इन आंखो को देखने की सामर्थ्य प्रदान की है। इसी प्रकार वाणी द्वारा जिसकी उपासना की जाती है वह ब्रह्म नहीं है। वरन् ब्रह्म वह है जिसकी शक्ति से वाणी उपासना करती है। संक्षेप में 'न एतत् देवाः आप्नुवन्' अर्थात् ये इन्द्रियाँ ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकती। वह ब्रह्म कर्म-इन्द्रियों, ज्ञान-इन्द्रियों व अन्त-करण चतुष्टय का विषय नहीं है। वह तो आत्मा का विषय है और उसी के द्वारा उसके भीतर ही ब्रह्म का साक्षात्कार किया जा सकता है।

वेदों में ब्रह्म की महिमा इस प्रकार गाई गई है-

(क) ब्रह्म वह है जिसने समस्त ब्रह्माण्ड की रचना की है, जिसने खाद्य पदार्थ देने वाली पृथ्वी को धारण किया है, जिसने अन्तरिक्ष को रस से आपूरित किया है और जिसने अपनी शक्तियों द्वारा द्युलोक को बिना खम्बों के (आधार स्तम्बों) के थाम रखा है। (अथर्ववेद)

(ख) ब्रह्म वह है जो गायत्री का अधिपति है, जिसने वेद रूपी ज्ञान प्रदान किया है। (अथर्ववेद)

(ग) यस्यछायाऽमृतं यस्य मृत्युः। (यजुर्वेद) अर्थात् जिसका आश्रय ही मोक्ष प्राप्ति है, जिसे दूर होना ही मृत्यु तुल्य है, दुःख का कारण है। (यजुर्वेद)

(घ) तमेव विदित्वाऽति मृयुमेति। (यजुर्वेद)

अर्थात् ब्रह्म वह है जिसे जान कर आत्मा मृत्यु के भय से छूट सकती है। यदि हम सारी पृथ्वी को कागज जान लें, समुद्र के जल को स्याही का रूप दे दें फिर भी ब्रह्म के गुणों को लेख-बद्ध नहीं कर सकते। इसीलिए ब्रह्म के गुण-कर्म-स्वभाव का चिन्तन करते-करते, ऋषि-जन 'नेति-नेति' कह उठते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि ब्रह्म-रूपी ओदन को पकाने के पीछे क्या भाव है? क्या रहस्य है? साधक के शब्दों में इसका अर्थ है, 'ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को अपने जीवन में धारण करना। हम साधारण आत्माओं के लिए यह प्राप्ति कोई एक दो दिन, मास, वर्ष में नहीं हो जाती। कई जन्म भी बीत सकते हैं। इसके लिए सर्वप्रथम धीमी गति से विवेक और वैराग्य को जगाना होता है। इसके अतिरिक्त दृढ़ संकल्प हो, परमपिता परमात्मा में अगाध श्रद्धा रखते हुए, भक्ति-भाव से नित-निरंतर तारतम्यता पूर्वक अभ्यास करना होता है। हम जानते ही है 'Slow and Steady wins the race.' अर्थात् ''सहज पके सो मीठा होये''। धीमी-धीमी आँच में ओदन पकाने से साधक का भी यह तात्पर्य है। जैसे-जैसे भक्ति-भाव से, श्रद्धा पूर्वक हम उसके प्रति समर्पित होते जाते हैं, उस परम पुरुष परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव हममें उतरने लगते हैं। समझ लीजिएगा कि भात पकनी आरम्भ हो गई है। जैसे नदियाँ बहती हुई अपने नाम और रूप का परित्याग कर समुद्र में विलीन हो जाती है, वैसे ही

एक साधक अपने नाम और रूप से विमुक्त होकर मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेता है, ईश्वर के शरणागत हो जाता है।

इस मन्त्र के दूसरे चरण में वेद माता आदेश दे रही है सावधान! यदि तुम मृत्यु को पार करना चाहते हो मृत्यु के भय से छूटना चाहते हो तो इस शरीर रूपी इंडिया में छिद्र मत होने देना, इसे तोड़ मत देना क्योंकि शरीर आद्यम् खलु धर्म साधनं। छिद्रों से संकेत है अन्तःकरण और बाह्यकरण के दोष, दुर्गुणः, यम और नियम का पालन न करना और काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष रूपी शत्रुओं का शिकार हो जाना। इन सबसे छुटकारा पाने के लिए हमें सर्वप्रथम स्वयं ही पुरुषार्थ करना है। विवेक, वैराग्य और अभ्यास की पद्धति द्वारा, तत्पश्चात् सहायता के लिए प्रभु से याचना और प्रार्थना करनी है। इसी प्रसंग में एक साधक यजुर्वेद के निम्नलिखित मन्त्र के द्वारा प्रभु से याचना कर रहा है:

ओ३म यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदस्य मनसो वातितृण्णम्।
बृहस्पति में तत् दधातु। शत्रो भवतु भुवनस्य यस्पतिः॥

यजु. 36-2॥

हे प्रभु! मेरी आँखो में, ज्ञान इन्द्रियों में, अन्तःकरण में जो दुर्गुण रूपी छिद्र है, उन्हें आप ठीक कर दें। मेरे मन में, हृदय आदि में जो घाव है, उन्हें आप भर देवें। हे जगत के स्वामी आप हम सब के लिए कल्याणकारी हों। ईश्वर ने हमें शरीर रूपी भाव भवसागर से पार उतरने के लिए प्रदान की। इसे अन्तःकरण चतुष्टय व बाह्य-करणों द्वारा सुसज्जित किया। परन्तु हमने अल्पज्ञता के कारण न जाने इसमें कितने छिद्र कर डाले, घाव कर डाले। इतना ही नहीं, अपनी न्यूनताएं देखने के स्थान पर दूसरों के दोष ढूँढने आरम्भ कर दिये। हम भूल गये कि जब हम अँगुली दूसरों की ओर उठाते हैं तो चार अँगुलियाँ हमारी ओर संकेत कर रही होती है। भक्त कबीर कितनी सुन्दर वाणी द्वारा हमें सावधान कर रहे हैं,

बुरा जो देखन मैं चल्यो, बुरा न मिलियो कोय।
जो मन खोजूँ आपना, मुझ से बुरा न कोय॥ भक्त कबीर॥

ईश्वर ने हमें आँखें दी थी उसकी सुन्दर सृष्टि को देखकर, उससे शिक्षा प्राप्त कर अपने जीवन को उन्नत बनाने के लिए। हमने अभद्र चित्र देख, अभद्र रंग-रूपों को देख अपने अन्तःकरण को दूषित और कलुषित कर दिया। श्रोत्र दिये वेद-वाणी सुनने के लिए, विद्वानों के प्रवचन सुनने के लिए परन्तु हमने इसमें छिद्र कर दिये, इनका दुप्रयोग ही किया। इसी प्रकार से हमने मन और हृदय को भी अपवित्र कर दिया। परन्तु जो बीती, सो बीती लेकिन बाकी उम्र सम्भालु मैं। आईए, इसी भाव से एक भरसक प्रयत्न करें अपने दोषों और दुर्गुणों को दूर करने का। दयालु ईश्वर, अवश्य ही दया करेंगे और हमारे जीवन में ब्रह्म-रूपी 'ओदन' पकनी आरम्भ हो जायेगी, सारा वातावरण सुगंधित हो उठेगा और हम आनन्द की ओर बढ़ निकलेंगे।

- 541-एल, मॉडल टाऊन, यमुनानगर

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **5000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

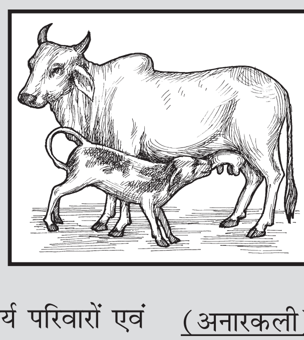

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 15000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,** के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

बोधोत्सव पर आयोजित प्रतियोगिता एवम् टंकारा उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम का चित्र

सायंकालीन यज्ञ 5.00 बजे से 7.00 बजे आयोजित किया। प्रातः एवं सायं यज्ञ के समय कई महानुभाव को सम्मानित भी किया गया। श्री एस.के.शर्मा, श्री रघुनाथ आर्य (चण्डीगढ़), श्री सतपाल गांधी (दिल्ली), श्री राजेन्द्र लाम्बा (दिल्ली), श्रीमती अरूणा सतीजा (जयपुर), श्री रत्नीश भईया जी (अलीगढ़), श्री सुशील भाटिया (चण्डीगढ़), श्री विद्यारत्न आर्य (राजपुरा पंजाब), श्री एस.सी. शर्मा (अलीगढ़), श्री कंवर जी भाई बवालिया (स्थानीय सांसद) आदि उपस्थित थे।

वेद प्रवचन एवं भक्ति संगीत सम्मेलन रात्रि 8.30 से 10.30 बजे तक आयोजित किया गया। इसमें जहां उपदेशक महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा ऋषि गुणगान के भजन प्रस्तुत किए गए वहीं मुख्य रूप से श्री जगत वर्मा जी जो कि पंजाब से विशेष रूप से कार्यक्रम के लिए उपस्थित थे के भजन हुए। श्री एस.के. शर्मा जी अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे। साथ ही मुख्य अतिथि श्री योगेश मुंजाल, श्री अरूण अबरोल, श्री लधा भाई पटेल भी उपस्थित थे। इसी अवसर पर डॉ. सोमदेव शास्त्री जी का भी उद्‌बोधन हुआ। इस सत्र की संयोजिका श्रीमती अरूणा सतीजा थी।

दिनांक 27 फरवरी 2014 शिवरात्रि एवं बोधोत्सव का मुख्य कार्यक्रम रहा। जिसमें प्रातः 8.30 बजे पूर्णहुति का यज्ञ प्रारम्भ किया गया। इसमें मुख्य यजमान के रूप में श्रीमती मणी सूरी एवं श्री पूनम सूरी जी उपस्थित थे। (**विशेष उल्लेखः- टंकारा ऋषिबोधोत्सव के इतिहास में जहां तक हमें स्मरण हैं कि श्री पूनम सूरी जैसा एवं श्रीमती मणी सूरी जैसा मुख्य यजमान उपस्थित नहीं हुआ। कारणः मुम्बई से 26 फरवरी रात्रि राजकोट पहुंचने के उपरांत प्रातः सम्पादक महोदय ने पति-पत्नी से अनुरोध किया कि आप 8.30 बजे यज्ञशाला में उपस्थित हो जाए तथा प्रातः काल शीघ्र उठे। क्योंकि सड़क मार्ग द्वारा राजकोट से टंकारा लगभग 1.15 घंटे का रास्ता है। इस कारण सम्पादक महोदय ने कहा कुछ हल्का अल्पाहार अवश्य कर लिजिएगा, क्योंकि 12.30 बजे तक आपको यज्ञ पर ही उपस्थित रहना है। सम्पादक महोदय को जो उत्तर प्राप्त हुआ उससे किसी भी ऋषि भक्त का मस्तक गर्व से उठ जायेगा। उत्तर था मान्यवर हम पति-पत्नी यज्ञ से पूर्व कभी अन्न जल ग्रहण नहीं करते।**) ऐसे यज्ञप्रेमी दम्पति को ऋषि जन्मभूमि की ऐतिहासिक यज्ञशाला में आते ही उपस्थित सभी जनसमूह ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। उनकी उपस्थित ने टंकारा ऋषि बोधोत्सव के इतिहास में एक ओर कीर्तिमान स्थापित किया। श्री पूनम सूरी जी डी.ए.वी प्रबन्धकर्त्री के ऐसे प्रथम प्रधान है जो ऋषि बोधोत्सव पर उपस्थित हुए एवं यज्ञ में सम्मिलित हुए।

आपके साथ मुख्य यज्ञवेदी पर ट्रस्ट प्रधान श्री सत्यानन्द जी मुंजाल के सुपुत्र श्री योगेश मुंजाल जी, श्री अरूण अवरोल जी, श्री एस. के. शर्मा जी, पश्चिमी भारत क्षेत्र के डी.ए.वी. के स्थानीय निर्देशक श्री के.वी. कुशल जी भी उपस्थित थे। सर्वप्रथम श्री पूनम सूरी जी ने ब्रह्म जी का वरण कर उन्हें तिलक लगाया एवं साथ ही सभी वेदपाठियों का

इस वर्ष यज्ञवेदी पर लधाभाई ट्रस्टी द्वारा श्री एस.के. शर्मा प्रधान प्रादेशिक सभा, श्री एस.के. दुआ जी (पुणे), श्री रघुनाथ राय जी (चण्डीगढ़), श्रीमती अमृता पाल (लंदन), एवम् श्री सुशील कुमार आर्य (चण्डीगढ़) को सम्मानित किया गया।

बोधोत्सव पर विद्वानों एवम् सन्यासियों का सम्मान करते हुए श्री योगेश मुंजाल सर्वश्री अमर सिंह वाचस्पति, विद्यारत्न आर्य साथ में उपदेशक विद्यालय की भजन मण्डली कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुई

उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा मलखम/रस्सी योग/आग के गोले से निकलने का प्रदर्शन किया।
साथ में आर्य समाज कन्या विद्यालय जामनगर द्वारा प्रस्तुत लघु नाटिका का दृश्य

भी वरण किया। तदुपरांत सूरी दम्पति ने अग्द्धान कर यज्ञ प्रारम्भ किया। पूरे यज्ञ समय में श्री पूनम सूरी को देख लोग चकित थे कि बिना किसी पुस्तक की सहायता के यज्ञ मन्त्रों को इस तरह से उच्चारण कर रहे थे जैसे मस्ती में कोई मधुर गीत गुन गुना रहे हो। ऐसे आर्यपुत्र को अपने बीच मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित कर आयोजको में भी उत्साह की लहर दौड़ गई। पूर्णाहुति के उपरांत

श्री पूनम सूरी जी ध्वजारोहण स्थल पर 15 मिनट देर से उपस्थित हुए। कारण प्रत्येक व्यक्ति उनके यज्ञ प्रेम को देखकर उन्हें शुभकामनाएं, आशीर्वाद देने के लिए उनके चारो ओर उपस्थित थे। सभी की शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद ग्रहण करते हुए वे ध्वज स्थल पर पहुंचे। जहां ट्रस्ट के व्योवृद्ध श्री लधाभाई पटेल जी ने ट्रस्ट की ओर से रेशमी पगड़ी पहनाकर उनका स्वागत किया और तदुपरांत भारत से आए हुए लगभग 150 व्यक्तियों ने उन्हें माला अर्पित कर सम्मानित किया। भारत का कोई ऐसा प्रान्त नहीं था

प्रसिद्ध आर्य गायक श्री जगत वर्मा जी द्वारा संगीतमय प्रस्तुति

(ऊपर) आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के 30 युवक एक गणवेश में दिल्ली से टंकारा मोटरसाइकिलों पर प्रचार यात्रा करते हुए टंकारा पहुंचे। उनके आगमन पर सभी को मंच पर आमंत्रित कर सम्मान किया गया।

(बाएं) डॉ. मुमुक्षु आर्य जी (नोएडा) द्वारा प्रायोजित वेद मन्त्र प्रतियोगिता में भाग लेते तीन प्रतियोगी एवम् विजय ब्रह्मचारी सन्यासी को परितोष्कि देते स्वामी श्रद्धानन्द जी (उड़ीसा)

टंकारा ऋषिबोधोत्सव 2014 की चित्रमय झांकी

आर्य समाज-भुज
गुजरात
आर्य समाज
।। ओउम् कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।
आर्य उपप्रतिनिधि सभा
अमरोहा (उ0प्र0) के तत्वाधान में
ऋषि बोधोत्सव
ऋग्वेद
सामवेद
आर्य समाज आदर्श नगर
जयपुर-4, राजस्थान
आपका हार्दिक अभिनन्दन करता है
ओ३म्
ऋषिबोधोत्सव की सभी को हार्दिक बधाई
जिला आर्य सभा लुधियाना
आर्य समाज मन्दिर
बगवां (हि.प्र.) 176047
वढवाण
आर्य समाज खैरथल
जिला- अलवर - राजस्थान
महर्षि दयानन्द सरस्वती की पावन जन्मभूमि टंकारा (गुजरात)
दिनांक :- 26 से 28 फरवरी 2014
महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव व बोधोत्सव
ऐतिहासिक शोभा यात्रा टंकारा
आपका हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन
सी-3, जनक पुरी, नई दिल्ली-58.
आपनुं हार्दिक स्वागत करे छे.
स्थापित – 1936
आर्य समाज मन्दिर
राजपुरा टाउन (पंजाब)
आर्य समाज मंदिर
जूनागढ
आपनुं हार्दिक स्वागत करे छे.
SHREEMAD DAYANANDA
KANYA VIDYALAYA
जीवनप्रभात परिवार
आपका हार्दिक स्वागत करता है

प्रशस्ति पत्र
टंकारा मित्र

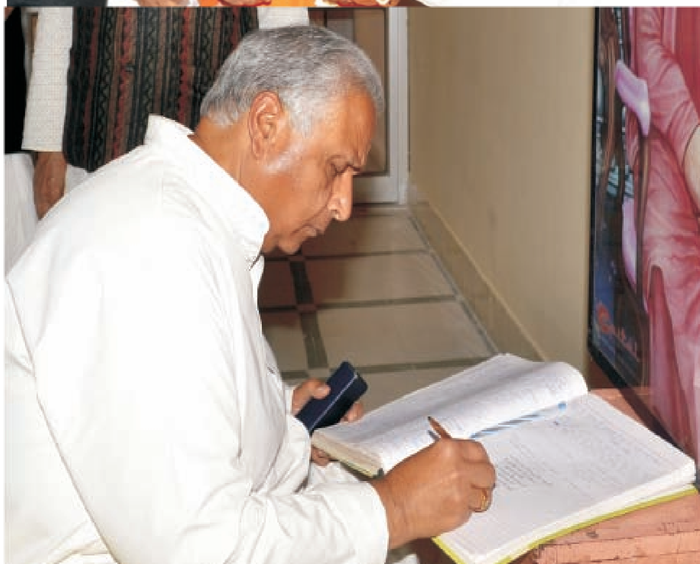

जन्म स्थान

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के मोटरसाइकिलों पर आए युवक मुख्य मंच से कार्यक्रम प्रस्तुत करते, लधा भाई द्वारा सफल यात्रा पूर्ण करने पर सभी युवको को प्रमाण पत्र देते हुए एवम् इस अवसर पर अपना उद्‌बोधन देते श्री बृहस्पति आर्य, सचिव आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश

जिसका प्रतिनिधित्व इस अवसर पर नहीं हुआ हो। ध्वजारोहण श्रीमती मणी सूरी एवम् श्री पूनम सूरी द्वारा किया गया। और इसी अवसर पर श्री सत्यपाल जी पथिक द्वारा ध्वज गीत गाया गया।

तदुपरांत श्री पूनम सूरी जी ने एक विशेष मंच से ओ३म् ध्वज लहराकर शोभायात्रा का प्रारम्भ किया। भारत वर्ष से पधारे लोगों में श्री पूनम सूरी जी को लेकर इतना उत्साह था कि प्रत्येक व्यक्ति उनके साथ चित्र खिंचवाने के लिए लालायित था जिस कारण आयोजकों को व्यवस्था बनाने में काफी जद्दोजहद करनी पड़ी। शोभायात्रा में स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी सुधानन्द सरस्वती, श्री पूनम सूरी, श्री सन्त कुमार आर्य, श्री राजेन्द्र आर्य, श्री तुलसीराम आर्य, श्री आर.पी. शर्मा, श्री जीवन लाल आर्य, श्रीमती अरूणा सतीजा, श्रीमती शशि दीवान, श्री धनजी भाई आर्य, श्रीमती कृष्णा शर्मा, श्री मनसुख भाई धनजी वेलाणी, श्री राम चन्द्र अरोड़ा, श्रीमती उषा अरोड़ा, श्री शिव कुमार आर्य, श्रीमती वेद साहनी, श्री चन्द्र सेन गोयल, श्री राजीव चौधरी, श्री ओ.पी. कायस्थ, श्री आर. बी. खन्ना, श्रीमती विनोद गांधी उपस्थित थे। लगभग 1 घंटे तक शोभायात्रा का संचालन करने के उपरांत मुंजाल भवन में उपस्थित स्थानीय राजकोट दूरदर्शन केन्द्र एवं ई. टी.वी गुजरात के संवाददाता ने इस अवसर पर उनसे एक भेंटवर्ता

बोधोत्सव पर आयोजित महर्षि दयानन्द वॉलीबाल टुर्नामेन्ट, विभिन्न प्रतियोगिता में विजय बालकों को परितोष्कि देते ट्रस्टीगण, प्रतियोगिता के संयोजक श्री हंसमुख भाई परमार, उत्सव को सम्बोधित करती श्रीमती अरूणा सतीजा (जयपुर)

एस.के. शर्मा, श्रीमती जे काकरिया, प्रो. महावीर, डॉ. सोमदेव शास्त्री, आचार्य राम देव, पं. जगदीश चन्द्र बसु, श्री गुरुदत्त तिवारी, श्री लधाभाई पटेल, श्री अरूण अब्रोल, डॉ. वी एच पटेल, हंसमुख परमार, श्री सुनील मानकटाला, श्री सुधीर मुंजाल, श्री मिठाई लाल सिंह, श्री सुरेश चन्द अग्रवाल, पं. रमेश चन्द मेहता, पं. सत्यपाल पथिक, श्री वाचोनिधी आर्य, श्रीमती भानू बेन मा. सोमनाथ, श्री विद्यारतन आर्य, श्री विजय सचदेवा, श्री शिवदत्त आर्य, श्री बी.पी. गुप्ता, श्री बलदेव राज आर्य, आयोजित की, जिसे उसी दिन रात्रि 9.00 बजे प्रसारित भी किया गया।

अपराह्न 3.00 बजे 5.00 बजे तक विशेष श्रद्धांजलि सभा का आयोजन श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात की अध्यक्षता में किया गया। श्री पूनम सूरी जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई का विशेष प्रवचन भी हुआ। विशेष आमंत्रित के रूप में, डॉ. बल्लभ भाई

प्रतिवर्ष बोधोत्सव पर टंकारा के पूर्व आचार्य स्व. सत्यदेव विद्यालंकार की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री विनोद शर्मा जी किन्ही तीन ब्रह्मचारियों को तेजस्विता पुरस्कार देते हैं। उसी अवसर पर ब्रह्मचारियों को परितोष्कि राशि देते श्री एस.के. दुआ जी एवम् आचार्य रामदवे। इसी अवसर पर गीजू भाई को सम्मानित किया गया।

यज्ञ पूर्ण होने पर प्रसाद ग्रहण करते श्री योगेश मुंजालए श्रीमती भानु भेन एवम् पाठी ब्रह्मचारियों को सम्मान राशि भेंट करते हुए। यज्ञ पर गुजराती में भजन प्रस्तुत करती श्रीमती भानु भेन (भुज)

कथीरिया (अध्यक्ष गौसेवा सदन गुजरात), श्री मोहन भाई कुण्डारिया (विधायक), श्री कान्तिभाई अमरतिया (विधायक मौरबी), श्री दुर्लभजी भाई (मौरबी), श्री एस.के. शर्मा, श्री अरूण अब्रोल, श्री गिरीश खोसला आर्य पथिक श्री वाचोनिधि आर्य उपस्थित थे। इस वर्ष प्रत्येक वर्ष की भांति श्री हंसमुख भाई परमार, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात को आर्यरत्न एवं श्री नानजी जयराम भाई हापलिया, राजकोट को टंकारा मित्र के रूप में सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर स्वामी संकल्पान्द स्मृति सम्मान श्री स्वामी सुधानन्द सरस्वती (उड़ीसा) को दिया गया जो कि आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई की ओर से प्रतिवर्ष इस अवसर पर दिया जाता है।

श्री पूनम सूरी जी को गुजरात राज की ओर से श्री डॉ. बी.एच. पटेल भूज एवं श्री वाचोनिधि आर्य (गांधीधाम) की ओर से विशेष कक्ष की पगड़ी एवं साल उड़ा कर सम्मानित किया गया। इसी अवसर श्री पूनम सूरी जी द्वारा टंकारा ऋषि बोधांक का लोकार्पण भी किया गया।

इस अवसर पर श्री एस.के. शर्मा, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली जी ने सम्पूर्ण कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए। टंकारा में तैयार हो रहे ब्रह्मचारियों के सर्वांगीण विकास के लिए जो प्रयास ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे है उसके लिए सभी ट्रस्टीयों को साधुवाद दिया। इसी अवसर पर श्री पूनम सूरी जी ने अपने दादा परम पूज्यनीय महात्मा आनन्द स्वामी जी को याद करते हुए उनके टंकारा प्रवास के विषय में जानकारी देते हुए। सभी को आह्वान किया कि इस भूमि में ऐसी उत्साहवर्धक तरंगे हैं जिन्में मैं स्वयं महसूस कर पा रहा हूं। आप सभी ऋषि भक्तों से मेरा अनुरोध है आप इन तरंगों को प्राप्त करें केवल आपको अपने शरीर के ट्रांसमीटर (तरंगें प्राप्त करने की इच्छा शक्ति) को खोल कर रखे। टंकारा जन्मभूमि पर उपस्थित पर अपनी जिज्ञासा को बताते हुए आपकी आंखो में अश्रुधारा देखी गई। उपस्थित जनसमूह में किसी एक वृद्ध ऋषि भक्त ने कहा '' देखा ना कोई ऐसा ऋषि प्रेम का दीवाना''।

कार्यक्रम के अन्त में श्री पूनम सूरी एवं अन्य अधीकारीगण ऋषि जन्म गृह पर उपस्थित हुए। जहां पर जीवन चरित्र पर आधारित चित्र कला प्रदर्शनी का अवलोकन किया और तदुपरांत जब ऋषि गृह के सामने पहुंचे तो अपनी आंखो से बहते अश्रु को रोक नहीं सके। सभी उपस्थित

स्थानीय विधायक एवम् मन्त्री गुजरात राज्य का उत्सव पर स्वागत करते आचार्य रामदेव जी

आधिकारियों को कहा कि एक ओर हो जाओ, मुझे यहां कुछ समय अकेले रहने दो। और वह उस जन्म गृह के सम्मुख एकांत में खड़े होकर निहारते रहे। ऋषि के प्रति ऐसी अन्थक श्रद्धा इस काल में हमें देखने को नहीं मिली। यहीं से राजकोट की ओर काफिला प्रस्थान किया गया।

ध्वजारोहण उपरान्त भोजनालय की ओर जाते मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी जी टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी एवं सहमन्त्री श्री अजय सहगल जी से ट्रस्ट की प्रगति एवम् जन्म स्थान को विश्व स्तरीय बनाने हेतु जानकारी लेते एवम् सुझाव देते हुए। साथ श्री योगेश मुंजाल एवम् अरूण अबरोल ट्रस्टी

રામ અને રામાયણની વિશ્વફલક પર લોકપ્રિયતા

પ્રસ્તુત લેખ ઇન્ટરનેટ અને સંદર્ભ ગ્રંથ 'વૈદિક યુગ એવં રામાયણ કાલ કી ઐતિહાસિકતા' અને વાલ્મિકી રામાયણ, પુરાણ તથા અન્ય શોધપત્રો પરથી સમ્પાદિત છે. લેખનો હેતુ રામાયણની વિશ્વ લોકપ્રિયતા સિદ્ધ કરવાનો છે, લેખમાં કેટલાક સ્થળ પર વૈદિક માન્યતાથી વિરુદ્ધ હોઈ શકે છે. **(લેખાંક ૧ લો)**

રમેશ મહેતા 'ટંકારામિત્ર'

ભારતનો ઇતિહાસ ક્રમશ: પૌરાણિક પંડિતો, મોગલો, ક્રિશ્ચિયન મિશનરિઓ, ધર્માંતરિત લોકો અને વામપંથિઓએ વિકૃત કર્યો છે. બધાંએ પોત-પોતાના હિત સાધવા માટે ભારતની પ્રાચીનતા અને ગૌરવ સાથે છેડખાની કર્યા છે. અહીંના ધર્મને વિરોધાભાષી બનાવી દીધો અને છેલ્લે છોડી દીધો છે.

કેટલાક લોકોનું કહેવું છે કે શ્રી રામ ભગવાન નહોતા, એ તો માત્ર રાજા હતા. કેટલાકનું માનવું છે કે તેઓ રામાયણ નામના ઉપન્યાસનું કાલ્પનિક પાત્ર માત્ર છે. તેઓ ક્યારેય થયા જ નથી. વર્તમાન સમયમાં પણ રામની આલોચના કરવાવાળા ઘણા બધા લોકો મળે છે. રામની વિરુદ્ધમાં તર્ક સાથે અનેક પુસ્તકો લખાયા છે.

આ પુસ્તકો લખનારાઓમાં વામપંથી વિચારધારા અને ધર્માન્તર કરવાવાળાઓ અને ધર્માન્તરિત થઈ ગયેલાઓએ આગળ પડતો ભાગ લીધો છે. તર્કથી સાચાને ખોટું અને ખોટાને સાબિત કરવું અઘરું નથી. તર્ક વેશ્યાઓ જેવો હોય છે જેનો ઉપયોગ કોઈપણ પક્ષમાં કરી શકાય છે. આપણે અહીં તર્ક નહીં, કેટલાક તથ્યોના આધારે વાત કરીશું.

રામ થઈ ગયા છે કે નહીં, આના પર ઘણા સંશોધનો થયા છે. એમાંની એક શોધ ફાધર કામિલ બુલ્કેએ પણ કરી છે. એમણે રામની પ્રામાણિકતા પર શોધ કરી અને આખી દુનિયામાં રામાયણ સાથે જોડાયેલા લગભગ ૩૦૦ રૂપોની ઓળખ કરી છે.

પ્લેનેટેરિયમ:- રામના વિષયમાં બીજી એક શોધ ચેન્નઇની એક ગેરસરકારી સંસ્થા ભારતજ્ઞાન દ્વારા છેલ્લા છ વર્ષોમાં કરવામાં આવી છે. એમના પ્રમાણે રામના જન્મને ૭,૧૨૩ વર્ષ થઈ ગયા છે. એમનું માનવું છે કે રામ એક ઐતિહાસિક વ્યક્તિ છે અને એના માટે પુરતા પ્રમાણ છે. રામનો જન્મ ઇ.સ. પૂર્વે ૫,૧૧૪ વર્ષ પહેલા થયો હતો.

સરોજબાલા, અશોક ભટનાગર અને કુલભૂષણ મિશ્ર દ્વારા લિખિત અને વેદો પર વૈજ્ઞાનિક શોધ સંસ્થાન (આઈ. સર્વ) હૈદરાબાદ દ્વારા પ્રકાશિત 'વૈદિકયુગ એવં રામાયણકાલ કી ઐતિહાસિકતા: સમુદ્ર કી ગહરાઈયોં સે આકાશ કી ઊંચાઈયો તક કે વૈજ્ઞાનિક પ્રમાણ' નામક શોધગ્રંથમાં પણ એનો ઉલ્લેખ જોવા મળે છે.

વાલ્મિકી રામાયણમાં કહેવામાં આવેલ નક્ષત્રોની સ્થિતિને 'પ્લેનેટેરિયમ' નામના સોફ્ટવેયરથી ગણના કરવામાં આવી તો ઉપરની તારીખની જાણ થઈ. આ એક એવો સોફ્ટવેયર છે, જે આગામી સૂર્ય અને ચંદ્ર ગ્રહણની ભવિષ્યવાણી પણ કરી સકે છે અને પાછલા લાખોં વર્ષોની ગ્રહ સ્થિતિ અને મોસમની ગણના કરી શકે છે.

મુમ્બઈમાં અનેક વૈજ્ઞાનિકો, ઇતિહાસકારો, વ્યવસાય જગતની હસ્તિઓની સામે આ શોધ સંબંધિત તથ્યો પર પ્રકાશ નાખતા આના સંસ્થાપક ટ્રસ્ટી ડી. કે હરીએ એક સમારોહમાં કહ્યું હતું કે આ શોધમાં વાલ્મિકી રામાયણને મૂળ આધાર માનીને અનેક વૈજ્ઞાનિક, ઐતિહાસિક, ભૌગોલિક, જ્યોતિષીય અને પુરાતાત્વિક તથ્યોની મદદ લેવામાં આવી છે. આ સમારોહનું આયોજન ભારતજ્ઞાનના આધ્યાત્મિક ગુરુ શ્રી શ્રી રવિશંકરજીની સંસ્થા આર્ટ ઑફ લિવિંગની સાથે મળીને કરવામાં આવ્યું હતું.

કેટલાક વર્ષ પહેલા વારાણસી સ્થિત શ્રીમદ્ આદ્ય જગદ્ગુરુ શંકરાચાર્ય શોધ સંસ્થાનના સંસ્થાપક સ્વામી જ્ઞાનાનંદ સરસ્વતીએ પણ અનેક સંસ્કૃત ગ્રંથોના આધારે રામ અને કૃષ્ણની ઐતિહાસિકતાને સ્થાપિત કરવાનું કામ કર્યું હતું.

એક શોધ પ્રમાણે લવ અને કુશની ૫૦મી પેઢીમાં શલ્ય થયા હતા, જે મહાભારતના યુદ્ધમાં કૌરવો તરફથી લડ્યા હતા. એની ગણના કરવામાં આવે તો લવ અને કુશ મહાભારત કાળના ૨૫૦૦ વર્ષ પહેલા ૩૦૦૦ વર્ષ પહેલા થયા હતા અર્થાત્ આજથી ૬૫૦૦ થી ૭૦૦૦ વર્ષ પહેલા.

પુસ્તકો અને ગ્રંથ:- નેપાળ, લાઓસ, કંપૂચિયા, મલેશિયા, કંબોડિયા, બાંગ્લાદેશ, ભૂટાન, શ્રીલંકા, બાલી, જાવા -સુમાત્રા અને થાઈલેંડ આદિ દેશોની લોક-સંસ્કૃતિ તેમજ ગ્રંથોમાં આજે પણ રામ જીવિત છે. દુનિયાભરમાં પથરાયેલા શિલાલેખ, ભીંતચિત્રો, સિક્કાઓ, રામસેતુ અન્ય પુરાતાત્વિક અવશેષ, પ્રાચીન ભાષાઓના ગ્રંથ આદિ દ્વારા રામના હોવાની પુષ્ટિ થાય છે.

રામાયણ: રામાયણ વાલ્મિકીના રામના કાળમાં જ લખાયું હતું એટલે આ ગ્રંથને સર્વાધિક પ્રામાણિક ગ્રંથ માનવામાં આવે છે. રામાયણ અને મહાભારત આજ ગ્રંથ મૂળત: હિન્દૂ સંસ્કૃતિની પ્રામાણિક જાણકારી આપે છે. આ મૂળ ગ્રંથ સંસ્કૃતમાં લખાયા છે. તદોપરાંત પુરાણોમાં વર્ણિત ઇતિહાસને મિથકીય રૂપે લેવામાં આવ્યો છે, જેમાં તથ્યોની ક્રમબદ્ધતા નથી. વાસ્તવમાં એતો કર્મકાંડ અને પૂજા-પદ્ધતિઓ પર આધારિત ઇતિહાસ-કથાઓ છે.

રામચરિત માનસ:- રામચરિત માનસને ગોસ્વામી તુલસીદાસે લખ્યું હતું, જેમનો જન્મ સંવત ૧૫૫૪માં થયો હતો. ગોસ્વામી તુલસીદાસે રામચરિત માનસની રચના અવધી ભાષામાં કરી છે. વાલ્મિકી રામાયણ કરતા આ ગ્રંથની લોકપ્રિયતા વધારે છે. પરંતુ આ ગ્રંથ પણ રામાયણ સહિત અન્ય ગ્રંથો અને લોક-માન્યતાઓ પર આધારિત છે.

વિદેશી રામાયણ:- કંપુચિયાની રામકેર્તિ કે રિઆમકેર રામાયણ, લાઓસ ફલક-ફલામ (રામજાતક), મલેશિયાની હિકાયત સેરીરામ, થાઈલેંડની રામકિયેન અને નેપાળમાં ભાનુભક્ત કૃત રામાયણ આદિ પ્રચલિત છે. તદોપરાંત બીજા પણ ઘણા દેશોમાં ત્યાંની ભાષામાં રામાયણ લખવામાં આવ્યું છે. આના પરથી સમજાય છે કે રામકથા અને રામનો પ્રભાવ સમ્પૂર્ણ વિશ્વ પર હતો.

શ્રીલંકા:- શ્રીલંકાના સંસ્કૃત અને પાલી સાહિત્યનો પ્રાચીન સમયથી જ ભારત સાથે ઘનિષ્ઠ સંબંધ હતો. ભારતીય મહાકાવ્યોની પરંપરા પર આધારિત 'જાનકી હરણ'ના રચયિતા કુમાર દાસના વિષયમાં કહેવાય છે કે તેઓ મહાકવિ કાલિદાસના અનન્ય મિત્ર હતા. કુમાર દાસ (૫૧૨ – ૨૧૨ ઈ.) લંકાના રાજા હતા. તે પહેલા ઈ. પૂ. ૭૦૦ વર્ષ પહેલા શ્રીલંકામાં મલેરાજની કથાની કથા સિંહલી ભાષામાં જન – જનમાં પ્રચલિત હતી, જે રામના જીવન સાથે જોડાયેલી છે.

બર્મા અને કંપૂચિયા:- બર્મા પહેલા બ્રહ્મદેશ તરીકે ઓળખાતો હતો. રામકથા પર આધારિત બર્માની પ્રાચીનતમ ગદ્યકૃતિ 'રામવત્થુ' છે. લાઓસમાં રામકથા પર આધારીત કેટલીયે રચનાઓ છે જેમાં મુખ્ય રૂપે ફલક-ફલામ (રામજાતક), ખ્વાય થોરફી, પોમ્મચક્ર (બ્રહ્મચક્ર) અને લંકા નાઈના નામ ઉલ્લેખનીય છે. કંપૂચિયાની રામાયણને ત્યાંના લોકો 'રિઆમકેર'ના નામથી જાણે છે, પરંતુ સાહિત્ય જગતમાં એ 'રામકેર્તિ'ના નામે પ્રસિદ્ધ છે.

ઇંડોનેશિયા અને જાવા:- સંપૂર્ણ ઇંડોનેશિયા અને મલેશિયામાં પહેલા હિન્દૂધર્મના લોકો રહેતા હતા પરંતુ ફિલિપિન્સના ઇસ્લામિકરણ પછી હિન્દૂઓની જ્યારે કત્લેઆમ થઈ તો બધાએ ઇસ્લામનો સ્વીકાર કરી લીધો.

ફિલિપિન્સની જેમ ત્યાં પણ રામકથોને તોડી-મરોડીને એક કાલ્પનિક કથાનું રૂપ અપાયું છે. ડૉ. જોન આર. ફ્રુકેસિસ્કોએ ફિલિપિન્સની મારનવ ભાષામાં સંકલિત આ વિકૃત રામકથાની શોધ કરી છે જેનું નામ 'મસલાદિયા લાબન' છે.

રામકથા પર આધારિત ઇંડોનેશિયાના જાવાની પ્રાચીનતમ કૃતિ 'રામાયણ કાકાવીન' છે. કાકાવીનની રચના કાવી ભાષામાં થઈ છે. એ જાવાની પ્રાચીનતમ શાસ્રીય ભાષા છે.

મલેશિયા:- મલેશિયાનું ઇસ્લામિકરણ ૧૩મી શતાબ્દી લગભગ થયું છે. મલ. રામાયણની પ્રાચીનતમ પાંડુલિપિ બોડલિયન પુસ્તકાલયમાં ઇ.સ. ૧૯૩૩માં જમા કરવામાં આવી છે. મલેશિયામાં રામકથા પર આધારિત એક વિસ્તૃત રચના છે 'હિકાકત સેરીરામ'. હિકાકત સેરીરામ વિચિત્રતાઓનું અજાયબ ઘર છે. એનો આરંભ રાવણની જન્મકથાથી થયો છે.

ચીન અને જાપાન:- ચીની રામાયણ 'અનામક જાતકમ' અને 'દશરથ કથાનમ'ના નામથી ઓળખાય છે. રામાયણના દરેકપાત્રના નામ જુદા જુદા છે અને ચીનમાં રામકથાના અર્થો પણ જુદા છે. 'અનામક જાતકમ' અને 'દશરથ કથાનમ' પ્રમાણે રાજા દશરથ જંબૂ દ્વીપના સમ્રાટ હતા અને પહેલા પુત્રનું નામ લોમો હતું.

ચીની કથા મુજબ ઇ.સ. પૂર્વે ૭,૩૨૩ વર્ષ પહેલ રામનો જન્મ થયો હતો. જાપાનના એક લોકપ્રિય કથા સંગ્રહ 'હોબુત્સુશૂ'માં સંક્ષિપ્ત રામકથા સંકલિત છે. આ કથા વસ્તુત: ચીનીભાષાના 'અનાકમ્ જાતકમ્' પર આધારિત છે, પરંતુ આ બંનેમાં ઘણું અંતર પણ છે.

મંગોલિયા:- ચીનની ઉત્તર-પશ્ચિમમાં સ્થિત મંગોલિયાના લોકોને રામકથાની વિસ્તૃત જાણકારી છે. ત્યાંના લામાઓના નિવાસ સ્થળમાં વાનર-પૂજાના અનેક પુસ્તકો અને પ્રતિમાઓ જોવા મળે છે. મંગોલિયામાં રામકથા સાથે સંબદ્ધ કાષ્ઠચિત્રો અને પાંડુલિપિઓ પણ ઉપલબ્ધ છે.

દમ્દિન સુરેને મંગોલિયાઈ ભાષામાં લખાયેલ ચાર રામકથાઓની શોધ કરી છે. એમાં 'રાજા જીવકની કથા' વિશેષ રૂપે ઉલ્લેખનીય છે જેની પાંડુલિપિ લેલિનગાર્જમાં સુરક્ષિત છે. જીવક જાતકની કથાનો ૧૮મી શતાબ્દીમાં તિબેટીમાંથી મંગોલિયાઈ ભાષામાં અનુવાદ થયો છે.

તિબેટ:- તિબેટમાં રામકથાને કિંરસ-પુંસ-પા કહે છે. ત્યાંના લોકો પ્રાચીન સમયથી વાલ્મિકી રામાયણની મુખ્ય કથાથી સુપરિચિત હતા. તિબેટી રામાયણની ૬ પ્રત તુન-હુઆંગ નામના સ્થળેથી પ્રાપ્ત થઈ છે.

તુર્કિસ્તાન:- એશિયાના પશ્ચિનોત્તર સામી પર સ્થિત તુર્કિસ્તાનના પૂર્વીભાગને ખોતાન કહે છે. જેની ભાષા ખોતાની છે. એચ ડબલ્યૂ બેલીએ પેરિસ પાંડુલિપિ સંગ્રહાલયમાંથી ખોતાની રામાયણને શોધીને દુનિયા સામે મુક્યુ છે.

શિલાલેખ અને ભીંતચિત્રો :- રામના સમયમાં સંપૂર્ણ ભારત (કાશ્મીરથી લઈને કન્યાકુમારી સુધી) અને સીરિયા, ઇરાક, ઈરાન, અફઘાનિસ્તાન, પાકિસ્તાન, બાંગ્લાદેશ, મ્યાંમાર (બર્મા), લાઓસ, થાઈલેંડ, વિયેટનામ, કંબોડિયા, સુમાત્રા, જાવા, ઇંડોનેશિયા, બાલી, ફિલિપીંસ, શ્રીલંકા, માલદીવ, મોરેશિયસ આદિ સ્થળોએ રામના ધ્વજ લહેરાતા હતા.

હિંદેશિયાનું નામ વિકૃત થઈને ઇંડોનેશિયા થઈ ગયું. ત્યાં પહેલા વાનર જાતિનું રાજ્ય હતું. ઇંડોનેશિયાના સુમાત્રા દ્વીપનું નામકરણ સુમિત્રાના નામ પરથી થયું છે. મધ્ય જાવાની એક નદીનું નામ સેરયૂ છે અને એજ ક્ષેત્રની નજીક એક ગુફાનું નામ કિસ્કેંદા અર્થાત્ કિષ્કિંધા છે.

લાઓસ, કંપૂચિયા અને થાઈલેંડના રાજભવનો તથા બૌદ્ધ વિહારોની ભીંતો પર કોતરવામાં આવેલ રામકથા ચિત્રાવલી આજે પણ સંરક્ષિત છે. લાઓસના લુઆ પ્રવા તથા વિયેનતિયાનના રાજપ્રસાદમાં થાઈ રામાયણ 'રામકિયેન' અને લાઓ રામાયણ ફલક-ફલામની કથાઓ દોરાયેલી છે.

લાઓસનો ઉપમુ બૌદ્ધ વિહાર રામકથાના ચિત્રો માટે પ્રસિદ્ધ છે. થાઇલૈંડના રાજભવન પરિસરમાં વાટફ્રકાયો (સરકત બુદ્ધ મન્દિર)ની ભીંતો પર સંપૂર્ણ થાઈ રામાયણ 'રામકિયેન'ને ચિત્રાંકિત કરેલી છે.

કંપૂચિયાની રાજધાની નામપેન્હમાં એક બૌદ્ધ સંસ્થાન છે, જ્યાં ખમેર લિપિમાં ૨૦૦૦ તાડપત્રો ઉપર લિપિબદ્ધ સંકલિત છે. આ સંકલનમાં કંપૂચિયાની રામાયણની પ્રત પણ છે.

વધારે આવતા અંકમાં

ટંકારામાં રાષ્ટ્રીય સ્તરનો આર્ય વીરાંગના દલ શિબિર

મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ ટંકારાના સહયોગથી ટંકારામાં ગુજ. પ્રા. આ. પ્ર. સભાએ રાષ્ટ્રીય સ્તરના આર્ય વીરાંગના દલ શિબિરનું આયોજન **૦૧થી ૦૮મી જુન ૨૦૧૪** દરમ્યાન કર્યું છે. શિબિરમાં રાષ્ટ્રીય સ્તરના પ્રશિક્ષકો મહિલાઓને શારીરિક અને બૌદ્ધિક પ્રશિક્ષણ આપશે. વધારે જાણકારી માટે સમ્પર્ક કરો:-

શ્રી હસમુખભાઈ પરમાર – મન્ત્રી, ગુજ. પ્રા. આ. પ્ર. સભા. મોબાઈલ નં. ૯૮૭૯૩૩૩૩૪૮

टंकारा यात्रा संस्मरण

❐ ईश्वर हन्दूजा

यात्राओं का अनुभव आनन्द और स्मृतियों का अलग ही मजा है, किन्तु धार्मिक यात्राओं और वह भी टंकारा की यात्रा का तो कहना ही क्या? चण्डीगढ़ निवासी श्री रघुनाथ राय आर्य, श्री सतपाल (हरीश) और विजय आर्य जी ने इस वर्ष भी पूर्व वर्षो की भांति दो तीन महीने पहले से ही कुछ सदस्यों को लगभग 22 थे तैयार करके उनकी टिकटें आरक्षित करवा ली और टंकारा ट्रस्ट को इस बारे में सूचित कर दिया था। सभी सदस्यों को कितनी उत्सुकता और जिज्ञासा होती है। महर्षि दयानन्द के बोधोत्सव पर टंकारा पहुंचने की और हो भी क्यों न हो। वहां से एक नई प्रेरणा जीवन जीने की राह मिलती है।

हम सभी चण्डीगढ़ के 22 यात्रियों में दिनांक 24.02.2014 को रात को 2:30 बजे कालका मेल से अपना स्थान प्राप्त कर लिया और गाड़ी के चलने से पहले रेलवे स्टेशन पर यज्ञ किया और जय कारा लगाते हुए भजन और ऋषि के गीत गाते हुए सुबह दिल्ली पहुंचे। दिल्ली से पोरबन्दर एक्सप्रेस गाड़ी लेकर राजकोट के लिए रवाना हुए। रास्ते में सब सदस्य एक डिब्बे में इकट्ठे हुए। प्रार्थना मंत्र वाचिक हवन, भजन किया और वातावरण को पवित्र यात्रामेव बना दिया। इसके पश्चात सभी ने प्रात: राश और दोपहर का भोजन इस प्रकार मिलकर खाया जैसे कि एक ही परिवार के सभी सदस्य हों। सायंकाल 4:30 बजे व्यावर (राजस्थान) स्टेशन पर वहां की आर्य समाज के कुछ सदस्यों ने स्टेशन पर भव्य स्वागत किया और ऋषि के जयकारे लगाते हुए, रेलवे स्टेशन को एक भव्य नजारा बना दिया। आर्य समाज ब्यावर के सदस्यो ने हमारे लिए स्वादिष्ट व स्वच्छ भोजन सबको भेंट किया। जयकारों और भजनों से ब्यावर का स्टेशन गुंजायमान हो गया। रेल के सभी यात्री भाव विभोर होकर देख रहे थे कि यह कैसा सुन्दर दृश्य था जो कि ब्यान नहीं किया जा सकता। दिनांक 25.02.2014 को सुबह 8 बजे राजकोट पहुंचे। टंकारा के गुरुकुल के छात्रों ने हमारा और सभी का स्वागत किया और अपनी बस से टंकारा ले आए। टंकारा आने पर सुन्दर व भव्य प्रवेश द्वारा के अन्दर जब बस पहुंची तो सभी ने ऋषि के जयकारे लगाए। जिससे वातावरण और भी सुन्दर हो गया। चण्डीगढ़ वालों के लिए एक बड़ा कमरा साफ-सुथरे बिस्तरों से सुसज्जित था हमें प्राप्त हो गया और हम नहा धोकर नाश्ता करके यज्ञ शाला में पहुंच गए। यज्ञ शाला की भव्यता को देखकर दिल मोह लिया। 12:00 बजे सत्संग समाप्त होने के पश्चात विश्राम करने के पश्चात फिर ऋषि की जन्म स्थली, गऊशाला और ऋषि बोध मन्दिर देखने चले गए। महर्षि दयानन्द सरस्वती के त्याग, कष्टों व प्रोपकारों की भावनाओं का अनुभव हो रहा था। कुछ देर तो हम उस भूतकाल में खो गए कि कैसे उन्होंने यह सब त्याग किया गया होगा। रात का, दोनों दिन का कार्यक्रम बहुत अच्छा था, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने लघुनाटिकाओं द्वारा आजकल की बुराईयों पर कटाक्ष करके शिक्षा देने की प्रेरणा दी। आचार्य श्री रामदेव जी ने ऋषि के जीवन और टंकारा ट्रस्ट के इतिहास पर प्रकाश डाला। श्री जगत राम, श्री अमर सिंह और श्री पंडित सतपाल पथिक जी के स्वरचित भजनों को गाकर सबको आनन्द विभोर कर दिया।

प्रात: काल 4:00 बजे उठकर प्रभात फेरी पर गए और नहा धोकर पुन: यज्ञ शाला पहुंच गए। श्री रघुनाथ राय आर्य अपने परिवार सहित यजमान बने। आचार्य रामदेव और गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने यर्जुवेद का सुन्दर गान किया। फिर भी पंडित पथिक जी और श्री अमर सिंह जी ने ऋषि के भजन गाकर यज्ञ शाला को गुंजायमान कर दिया। चण्डीगढ़ के दो सदस्यों को सुन्दर शालों से सम्मानित किया गया। श्री रघुनाथ राय आर्य और श्री सुशील भाटिया के कार्यो की सराहना भी की।

मंच का संचालन श्री अजय सहगल (टंकारा वाला) सुपुत्र श्री रामनाथ सहगल ने बड़ी कुशलता से मंच का संचालन किया। यज्ञशाला में अनुशासन व व्यवस्था पर पूर्ण ध्यान रखा गया, जिससे वातावरण बड़ा शान्त व पवित्र बना रहा और श्री अजय सहगल टंकारा वाला के कुशल नेत्रों में उनके पिता रामनाथ सहगल की समृद्धि झलकती रही। श्री अजय सहगल ने इतने बड़े ऋषि उत्सव का नेतृत्व व कुशल भोजन की सुन्दर व्यवस्था, यात्रियों का ठहरने का प्रबन्ध, स्वच्छ जल, छाच प्रात: दूध, चाय गर्म पानी की प्रचुरता ने सबको सन्तुष्ट और विभोर कर दिया। शोभा यात्रा का दृश्य जो शीघ्र ही अजय सहगल टंकारा वाला के नेतृत्व में निकाली गई। वह दृश्य देखने वाला था। बड़ा ही सुन्दर भव्य दृश्य था। सबको ऐसा लग रहा था जैसे महर्षि जी शोभा यात्रा में आए हुए हों। सभी सदस्यों की पगड़ियां दुपट्टे व ओ३म ध्वजों से वातावरण बड़ा ही भव्य दिखाई देता था। विभिन्न आर्य समाजों से आए हुए व्यक्तियों ने अपने हाथों में ध्वज लेकर पीत वस्त्रों से सुसज्जित होकर टंकारा की गलियों में निकल पड़े। मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी का इससे पूर्व फूल मालाओं से स्वागत किया गया। उन्होंने सब को ध्वज दिखाकर शोभा यात्रा को चलने का आह्वान किया। टंकारा की गलियों में शोभा यात्रा का कई जगह शीतल जल, छाच और टोफियां आदि से स्वागत भी किया गया। सबसे बड़ी बात ये भी कि हमारे मुस्लिम भाईयों ने भी सभी शोभा यात्रा में सम्मलित सदस्यों को शरबत पिलाकर स्वागत किया। दिल्ली से आए मोटर साईकलों पर आर्य वीर दल (युवा) द्वारा टंकारा आए और अपने सुन्दर आचार/भूमिकाएं और करतब दिखाएं। पंडित श्री अमर सिंह जी ने ऋषि के भजनों को गाकर सभी युवकों और युवतियों में उत्साह भर दिया।

रात का कार्यक्रम भी बहुत आकर्षक था। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने लघुनाटिकाएं दिखाई और मुख्य वक्ता श्री पूनम सूरी, जो आर्य समाज और डी.ए.वी. संगठन के प्रधान है। उन्होंने आर्य समाजों के संगठन और डी.ए.वी. स्कूलों व कॉलेजों की शिक्षा पर बल दिया और इसके प्रसार और महत्व को विस्तार से बताया। सभी को आर्य समाजों के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति सजग किया। कई विद्वानों, सन्यासियों और गुरुकुल के ब्रह्मचारियों और अन्य कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया। भुज और कच्छ से आर्य समाज की महिलाओं ने भोजन की व्यवस्था सम्भाली हुई थी। उन्होंने श्री अजय सहगल को भी सम्मानित किया। सारांश ये कि ये बड़ी यात्रा सुखद और आनन्दायक थी। कोई कहीं भी कठिनाई का अनुभव नहीं हुआ। श्री अजय सहगल टंकारा वाले और श्री रामनाथ सहगल को परमात्मा स्वस्थ रखे। इन्होंने तो स्वामी जी के ऋण से उत्तीर्ण होने के लिए दिन-रात लगाकर टंकारा का ऋषि बोधोत्सव को सुशोभित किया। मेरी सभी से प्रार्थना है कि वह स्वयं वहां एक बार तो अवश्य टंकारा में पहुंच कर ऋषि जन्म स्थान और ऋषि जन्म स्थान को महत्व दें और प्रेरणा प्रति वर्ष वहां जाने के लिए उत्साहित करें।

– मंत्राणी स्त्री आर्य समाज, सैक्टर-7बी, चण्डीगढ़

समाचार दर्पण

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर राजस्थान सरकार का कैदियों की रिहाई का निर्णय आर्यजगत् के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा

महर्षि दयानन्द सरस्वती की जयन्ती की पूर्व संध्या पर राजस्थान की मुख्यमन्त्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने प्रदेश के जिलों से 159 कैदियों की रिहाई का आदेश जारी किया। आदेश में जयपुर सेन्ट्रल जेल के 12 और स्थाई पेरोल वाले 19 कैदियों को भी आजाद करने की घोषणा की। राजस्थान के सर्वाधिक बिक्री वाले समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका ने प्रकाशित किया। सलाखों के पीछे जिन्दगी का एक एक दिन गिन रहे पून्याराम और पप्पू जैसे 159 कैदियों के लिए सोमवार को उगने वाला सूरज अंधेरे की बेड़ियों को तोड़ने वाला होगा।

प्रदेश सरकार ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की जयन्ती पर 24 फरवरी को राज्यभर की जेलों में बंद इन कैदियों को आजाद करने का फैसला किया है। जयपुर सेन्ट्रल जेल में बंद 12 कैदी और स्थाई पैरोल प्राप्त 19 कैदी भी रिहा किए जाएंगे। राज्य सरकार ने निर्देश के बाद गुरुवार से ही जेलों में कैदियों की सूची तैयार की जाने लगी थी। रविवार को भी जेल के अधिकारी इसे अंतिम रूप देने में देर रात तक जुटे रहे। रिहाई के साथ ही लगभग 3500 कैदियों की सजा भी कम की जाएगी।

इनमें वृद्ध, गंभीर बीमारी से ग्रसित और अब तक की सजा शांतिपूर्वक भुगतने वाले कैदी शामिल किए गए हैं। पहले अपराधिक कृत्य में सजा पाने वाले ऐसे कैदियों की सूची बनाई गई, जो अपनी सजा का दो तिहाई भाग जेल में काट चुके हैं। आजीवन कारावास व 10 साल की सजा प्राप्त कैदियों की सजा में छह माह, पांच से 10 वर्ष की सजा प्राप्त कैदियों की सजा में चार माह और दो से पांच वर्ष की सजा प्राप्त कैदियों के कारावास में दो माह की अवधि कम की गई है।

वार्षिकोत्सव सौल्लास सम्पन्न

गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ (उ.प्र.) के कुलाधिपति पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा से संचालित गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ नूंआपाली बरगढ़ ओडिसा का 12वां वार्षिकोत्सव माघ शुक्ल चतुर्दशी व पूर्णिमा 2070 (तदनुसार 13, 14 फरवरी 2014) को 51 कुण्डीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के साथ सौल्लास मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सुरेश्वरानन्द जी, स्वामी संविदानन्द जी केरल, स्वामी धर्मानंद सरस्वती, आचार्य नंदकिशोर जी होशंगाबाद, आचार्य अन्शुदेव जी दुर्ग, श्री कन्हैयालाल जी आर्य गुड़गांव, श्री योगेश मोवार जी मेरठ, डॉ उजागर पटेल संबलपुर, प्रो जयदेव डनसेना बलांगीर तथा डॉ. सोमदेव जी शतान्शु हरिद्वार उपस्थित थे। गुरुकुल के स्नातकों में डॉ. शिवशंकर शास्त्री, धीरेन्द्र शास्त्री, प्रेमप्रकाश शास्त्री, पुरंदरशास्त्री, भारत कुमार शास्त्री, विद्यासागर शास्त्री, धनंजय शास्त्री, डॉ. अजय आर्य, कन्या गुरुकुल की आचार्या, डॉ अहल्या नायक तथा सागरिका जी भी समुपस्थित थे। गुरुकुल के आचार्य बृहस्पति जी आचार्य भगवानदेव जी का विशिष्ट योगदान रहा।

चुनाव समाचार

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर (लाल बंगला) कानपुर
प्रधान- श्री सीता राम आर्य **मन्त्री**- श्री सियाराम आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री देवेन्द्र आर्य

आर्य समाज मन्दिर फेज-6, मोहाली, पंजाब
प्रधान- श्री निरेन्द्र गुप्ता **मन्त्री**- श्री विजय आर्य/श्री कौडा जी
कोषाध्यक्ष- श्री राजेन्द्र गुप्ता

आर्य प्रतिनिधि सभा, देहरादून, उत्तराखण्ड
प्रधान- श्री देवराज आर्य **मन्त्री**- श्री आनन्द प्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री प्राणनाथ खुल्लर

आर्य समाज मन्दिर, पिलखुवा, गाजियाबाद
प्रधान- श्री राजपाल सिंह आर्य **मन्त्री**- श्री प्रेमचन्द आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री विजय कुमार आर्य

आर्य समाज, भीमगंजमण्डी, कोटा जं.
प्रधान- श्री सूरजमल त्यागी **मन्त्री**- श्री ओमदत्त गुप्ता,
कोषाध्यक्ष- श्री अजय सूद

रन फोर विजडम

महर्षि दयानन्द सरस्वती की जयन्ती के अवसर पर **श्रीमद दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास** द्वारा आयोजित **''रन फोर विजडम''** का आयोजन किया गया। उक्त दौड़ दूध तलाई से प्रारंभ हुई और नवलखा महल पर समाप्त हुई। शहर के विभिन्न विद्यालयों के लगभग 900 विद्यार्थी एवं आर्यसमाज के 100 परिजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दौड़ को ग्रामीण विधायक श्री फूल चन्द मीणा, राजीवगांधी जनजातीय विश्वविद्यालय के कुलपति श्रीमान टी. सी. डामोर साहब एवं न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य द्वारा हरी झण्डी दिखाकर प्रारंभ किया गया।

ग्रामीण विधायक श्री फूलचन्द मीणा ने अपने उद्‌बोधन में हर बालक को शिक्षा प्रदान कराना हम सबका प्रथम कर्तव्य बताया। उन्होंने कहा कि कोई भी बालक शिक्षा से वंचित नहीं रहना चाहिये। साथ ही महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं को अपनाते हुए अंधविश्वास व पाखण्ड को समाज से पूर्ण रुप से हटाने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक डॉ. अमृत लाल तापड़िया ने रैली के उद्‌देश्य के बारे मे बताया। संयोजक श्री संजय शांडिल्य ने विस्तृत दिशा निर्देश प्रदान किये। दौड़ के समापन पर सभी प्रतिभागी नवलखा महल के बाहर एकत्र हुए। समूह को न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य द्वारा संबोधित करते हुए महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं एवं निर्देशों से अवगत कराया गया। श्री आर्य ने सृष्टि के नियम को सत्य व असत्य का निर्धारण का आधार बताया। साथ ही बच्चों को पाखण्ड व अंधविश्वास से सर्वथा दूर रहने हेतु विस्तार से निर्देशित किया। नवलखा महल व न्यास द्वारा नियमित रुप से किये जाने वाले विभिन्न आयोजनों के बारे में बताया एवं नवलखा महल में निर्मित चित्र दीर्घा के अवलोकन हेतु प्रेरित किया। इस अवसर पर प्रत्येक प्रतिभागी को एक किट प्रदान किया गया जिसमें अल्पाहार के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी, एवं नवलखा महल एक परिचय आदि पुस्तकों का समावेश रहा। अंत में न्यास के मंत्री श्री भवानीदास आर्य द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

– सुरेश चन्द पाटोदी, व्यवस्थापक– न्यास

अर्जुनदेव चड्ढा आर्य कर्मवीर उपाधि से सम्मानित

आर्य समाज के माध्यम से समर्पित होकर समाज सेवा करने के लिए कोटा आर्य समाज के जिला प्रधान व प्रतिष्ठित समाज सेवी अर्जुनदेव चड्डा को हरिद्वार ज्वालापुर स्थित वानप्रस्थ आश्रम में आयोजित समारोह में स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार से सम्मानित कया गया। समारोह में अर्जुनदेव चड्ढा को उनके द्वारा मनसा, वाचा, कर्मणा के साथ मानवता की अहर्निश प्रेरणादायी व अनुकरणीय समाजसेवा के उपलक्ष्य में ट्रस्ट की ओर से पदाधिकारियों द्वारा 11 हजार रूपये की नकद राशि भी भेंट स्वरूप प्रदान की गई।

No transportation mars Donations

RECOGNIZING THEIR EFFORT: Bhatias being felicitated at GMCH

It was a rare act of generosity coming from a family of eight siblings, all in their twillight years, pledging their bodies for donation for medical research and teaching. However, the request for the Bhatia family was turned down at PGI.

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

आर्यवीर दल–गुजरात द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर

आर्यवीर दल का ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर आगामी मई माह में दिनांक 05.05.2014 से 11.05.2014 तक निम्नलिखित स्थल पर करने का निश्चय किया है, जिसमें आर्यवीर और शाखा संचालक अभ्यास क्रम का प्रशिक्षण दिया जाएगा। जिसमें 14 से 20 वर्ष की आयु वाले आर्यवीरों को प्रवेश दिया जायेगा। इसके प्रवेश फार्म भरकर तथा शिविर शल्क 200/- रूपये प्रति आर्यवीर टंकारा कार्यालय में संचालक श्री हसमुख भाई परमार जी के पास भेजने का कष्ट करें।

शिविर स्थलः संत ओधवराम वैदिक गुरुकुल भवानीपुर, अबडासा, कच्छ।

शिविर के मुख्य अतिथिः श्री छबील भाई पटेल, धारासभ्य अबडासा कच्छ।

अतिथि विशेषः (1) श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात

(2) श्री मनसुख भाई वेलाणी, प्रधान–आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट, रोजड़।

सूचनाः- (1) शिविरार्थियों साथ लाने खाकी नैकर, सफेद बनियान, सफेद शर्ट, सफेद मोजा, खाकी जूता (पी.टी.सूज), लाठी, सादा कपड़े, नहाने का सामान, ऋतु अनुकुल शॉल, चादर, नोट-बुक और पेन। **(2)** मोबाइल फोन और कीमती वस्तुएं साथ ना लायें तथा अनुशासन का पालन करें। **(3)** शिविर के अंत में आर्यवीरों की लिखित, मौखिक, मैदानी कार्य की परीक्षा होगी। जिसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले आर्यवीरों और उनसे सम्बन्धित आर्यसमाज/विद्यालय को पुरूष्कृत किया जाएगा।

नोटः प्रत्येक आर्यसमाजों/विद्यालयों से अनुरोध है कि अधिक संख्या में अनुशासित किशोर, युवाओं को भेजने की व्यवस्था करें। शिविरार्थियों की संख्या निश्चित करने के लिए शिविर संयोजक को अथवा संचालक को दूरभाष पर सूचना अवश्य दें।

दिनांक 05.05.2014 से 11.05.2014

हसमुख परमार	**स्वामी शांतानन्द सरस्वती**	**नितिन चौहान**
संचालक	संयोजक	मन्त्री
मो. 09879333348	मो. 0998594810	मो. 09879029982
श्री मंगलभाई भानुशाली	**देवकुमार पडसुंबिया**	**शिविर कार्यालय**
सह-संयोजक	कोषाध्यक्ष	**आर्यसमाज-टंकारा (राजकोट)**
एवं गुरुकुल के ट्रस्टीगण	मो. 09979355171	
दूरभाष-02831-288255		

पुरोहित चिन्तन एवं प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने पुरोहितों के लिए चिन्तन एवं प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। जिसमें उन पुरोहितों को शामिल किया गया कि जो वर्तमान में गुजरात की विभिन्न आर्यसमाजों में सेवारत हैं। शिविर का मुख्य रूप से उद्देश्य पुरोहितों का उत्साह वर्धन कर उनको वैदिक धर्म प्रचार में सक्रीय भूमिका निभाने की प्रेरणा देना था। जिनके अन्तर्गत जिन विषयों पर चिन्तन हुआ एवं प्रशिक्षण दिया गया वह इस प्रकार है (1) मन्त्रोच्चारण में शुद्धता लाना (2) यज्ञ व संस्कारों की प्रक्रिया में एक रूपता स्थापित करना (3) सत्संग, सभा, सम्मेलनों में विषय प्रतिपाद की कुशलता प्राप्त करना (4) शंका समाधान करने की योग्यता प्राप्त करना (5) आर्य समाज मन्दिरों में वैदिक पाठशाला चालु कर उसमें प्रशिक्षण देने की जिम्मेदारी निभाना (6) आचार संहिता लागु करना (7) यज्ञ एवं संस्कारों में अवैदिक क्रियाओं के प्रवेश की संभावनाओं से सतर्क रहना।

पुरोहित आर्यसमाज का दर्पण होता है–श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल। **पुरोहित अनुकरणीय होता है, समाज उसका अनुकरण करता है**–पं. रामस्वरूप जी। **जिसका आर्थिक व्यवहार पवित्र है वह सबसे अधिक पवित्र है**- आचार्य रामदेव

तीन दिन चले इस शिविर में विभिन्न सत्रों में दीर्घ चर्चाए हुई। महत्वपूर्ण विशेषता यह रही सभी चर्चाएं सकारात्मक वातावरण में हुई। जिसकी उपलब्धि भी यह रही कि सभी पुरोहितों ने सभा द्वारा निर्देशित वैदिक धर्म के कार्यो–योजनाओं में जिम्मेदारी निभाने की तैयारी जताई।

पुरोहितों को बताया गया कि वह अपने को कर्मचारी नहीं कर्मयोगी समझें। पुरोहित आर्यसमाज मन्दिर की पहचान है। वह अपने व्यवहार से आर्यसमाज में आनेवाले मुलाकाती का उचित स्वागत कर आर्यसमाज के वैदिक दृष्टिकोण से अवगत कराके संतुष्ट कर सकता है। उसका व्यवहार अनुकरणीय हों। जिसे देखकर समाज प्रेरणा लें। जिस प्रकार से यज्ञ कर्म श्रेष्ठतम कर्म है वैसे ही पुरोहित का कर्तव्य समाज को श्रेष्ठतम बनाना है। वह जन संपर्क करें, प्रतिदिन अथवा प्रतिसप्ताह घर–परिवारों व आसपास के गांव की मुलाकात कर उनकी यज्ञ करने व साप्ताहिक सत्संगों में आने की प्रेरणा दे। वैदिक साहित्य वितरीत करें। पुरोहितों को यह भी प्रेरणा दी गई कि वे अपनी आर्यसमाजों में आर्यवीर दल की स्थापना कर उसके संचालन की जिम्मेदारी संभाले।

प्रान्तीय सभा ने निश्चय किया है कि गुजरात की प्रत्येक आर्यसमाजों में वैदिक पाठशाला की स्थापना की जाये। जिसमें आर्य परिवारों के व अन्य बच्चों को ईश्वरभक्ति, पितृभक्ति, चरित्र निर्माण, शिष्टाचार आदि की शिक्षा दी जाये। इसके लिए आर्यसमाज का पुरोहित प्रशिक्षक की भूमिका निभायें। शिविरार्थी पुरोहितों ने इस कार्य के लिए अपना उत्साह प्रदर्शित किया और पाठ्यक्रम निर्धारित कर आगामी जून से प्रारंभ करने की तत्परता दिखाई।

शिविरार्थी को मार्गदर्शन के लिए आचार्य रामदेवजी (प्राचार्य उपदेशक महाविद्यालय टंकारा) पं. रामस्वरूप जी (अजमेर) आचार्य नवानन्द जी दर्शनाचार्य (टंकारा) व आचार्य शैलष जी (गांधीनगर) ने अपनी सेवाएं दी। शिविर में प्रान्तीय सभा के प्रधान माननीय श्री सुरेशचन्द्र जी अग्रवाल व बृहद् सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री रणजीत सिंह परमार पधारे व अपने विचार रखकर सबका उत्साह वर्धन किया।

शिविर महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक महालय टंकारा के शांत, पवित्र व प्राकृतिक वातावरण में आयोजित किया गया। शिविर का संयोजन व संचालन सभामन्त्री हसमुख भाई परमार ने किया एवं सबका आभार प्रदर्शित कर आगामी शिविर में इसी प्रकार उत्साह पूर्वक भाग लेने का निमन्त्रण दिया।

ईश्वर है या नही? एक विचारोत्तेजक संगोष्ठी

दक्षिणी दिल्ली के विभिन्न रेजिडेंट वेलफेअर असोसिएशन, धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं का संयुक्त प्रयास
सामाजिक जागरूकता व प्रसार के लिए प्रख्यात शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों के मार्गदर्शन में

आशीर्वचन	:	**श्री बृज मोहन लाल मुंजाल**- चेयरमैन, हीरो ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज
मुख्य अतिथि	:	**डॉ अशोक चौहान,** संस्थापक अध्यक्ष, एमिटी विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान व चेयरमैन ए के सी ग्रुप, **डॉ. अमिता चौहान**- चेयरपर्सन, एमिटी इंटरनेशनल स्कूल्स
विशिष्ठ अतिथि	:	श्री रामनाथ सहगल, श्री रजनीश गोयनका, श्री योगेश मुंजाल, श्री आनंद चौहान, श्री योगराज अरोड़ा, श्री नितीनजय चौधरी, श्री जे.आर.गुप्ता, श्री राज सिंह आर्य, श्री विनय आर्य, श्री राजीव आर्य
संगोष्ठी अध्यक्ष	:	डॉ शशि प्रभा कुमार–उपकुलपति (नामित), साँची विश्वविद्यालय, भोपाल
पैनल के सदस्य	:	प्रोफेसर सिद्धेश्वर रामेश्वर भट्ट (बोद्ध दर्शन) डॉ वीर सागर जैन (जैन दर्शन) प्राफेसर पी.के.यादव (वैज्ञानिक दर्शन) डॉ वागीश आचार्य (वैदिक दर्शन) डॉ विनय विद्यालंकार (वैदिक दर्शन)
दिनांक व समय	:	**13 अप्रैल 2014 (रविवार) को सांय 4.00 बजे से सांय 8.30 बजे**
स्थान	:	**आर्य ऑडिटोरियम, चंद्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट, देस राज परिसर (इस्कॉन मंदिर के पास), सी ब्लॉक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली**

कृपया अपना नाम अग्रिम पंजीकृत करने लिए **श्री अजय कुमार (9911111989), श्री राजीव चौधरी (9810014097), कर्नल गोपाल वर्मा (9811121242)** से संपर्क करें जिससे उचित व्यवस्था की जा सके। कृपया अपना स्थान सायं 3.45 तक ग्रहण करें। इस कार्यक्रम के लिए कृपया 'आर्य समाज जी.के -1' को उदारता पूर्वक सहयोग दें। आर्य समाज जी.के.-1 को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80 -जी (5) के अंतर्गत छूट के योग्य है।

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

के तत्वावधान में

व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण

वार्षिक शिविर-2014

दिनांक रविवार 1 जून से रविवार 8 जून, 2014

स्थान: ऋषि जन्मभूमि टंकारा में
सौजन्य महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट
जिला-राजकोट (टंकारा) में आयोजित हो रहा है।

★ वीरांगना की आयु कम से कम 14 वर्ष हो। ★ ऋतु के अनुसार अपना बिस्तर, भोजन के बर्तन, टार्च, लाठी, मग, साबुन साथ लायें। ★ शिविर का गणवेश 2 जोड़ी सफेद सलवार कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद पी.टी. शूज, सफेद मोजे व पहनने के उचित कपड़े साथ लाएं। ★ शिविरार्थी कोई भी कीमती वस्तु व पैसा साथ न लाएं। ★ शिविर के बीच में अभिभावक मिलने न आएं, इससे व्यवस्था खराब होती है। ★ शिविर शुल्क 200 रुपये प्रति शिविरार्थी होगा। ★ सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 20 मई तक अवश्य करा लें, फोन द्वारा भी करा सकते है, ताकि व्यवस्था सुचारू रूप से हो सके। ★ सभी शिविरार्थी 1 जून, 2014 रविवार, दोपहर 12 बजे तक शिविर स्थल पर अवश्य पहुंच जाएं। ★ अस्वस्थ कन्याएं एवं जो अपना कार्य स्वयं करने में असमर्थ हों, कृपया शिविर में भाग न लें।

निवेदक

डॉ. उज्ज्वला आचार्या, साध्वी उत्तमा यति
प्रधान संचालिका,
मो. 8750482498 (दिल्ली), मो. 9672286863 (अजमेर)

मृदुला चौहान
संचालिका,
मो. 9810702760

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलो में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां प्रतिवर्ष कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते है कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मियता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते है। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि घर से जुड़ सकते है। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

एक पेड़ से लाखों माचिस की तीलियां बनती हैं, लेकिन एक तीलि लाखों पेड़ों को जला देती है। इसी प्रकार एक नकारात्मक विचार या शक आपके हजारो सपनों को जला सकता है। इसलिए हमेशा सकारात्मक ही सोचें।

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-4-2014
R.N.I. No 68339/98

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय